भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 10 | **अप्रैल** 2009 | **अंक** 4

ये किताबें

सदा सनातन संसार!

संस्कार-संसृति
प्रेरणा-पीयूष संस्कृति
सभ्यता-शिष्टाचार
समता-सहचारिता
सविनय-सहकारिता
जैसी अन्य सरीखी बातें कहतीं
बहुत कुछ सिखातीं
ये किताबें!

तभी तो युगों युगों से
पथदर्शिका बनकर
कैसे कैसे रहस्यों को
अपने में समेटे
और फिर यथावकाश पर
उद्घाटित करती रहतीं
समर्पित होती रहतीं
ये किताबें!

अशेष शोध-अनुसंधान की कथा-वार्ताएँ
नेक-अनेक सत्चरित्र हिये में लिए
सदा नूतन बनी रहतीं
चिरजीवन अमरबेल सी
अमरालय में ही रहती होंगी
हाँ, निश्चित ही लगती हैं प्रियभाषी
प्रियदर्शनी सी प्रियंवदनी
ये किताबें!

और फिर निरंतर प्राणेश्वरी
प्रातः स्मरणीय
मान-मर्यादा सिखातीं
प्रीतिकर बनी रहतीं
और कभी प्रेमगर्विता हो
प्रेमालिंगन में
प्रेमाश्रु तक महकाए
ये किताबें
ये किताबें
ये किताबें!!!

—डॉ० रजनीकान्त जोशी

शक्ति की करो मौलिक कल्पना

संवत्सर आरम्भ हो चुका है, साथ ही आरम्भ हो चुका है शक्ति-आराधना का महापर्व बासंती-नवरात्र। इस आध्यात्मिक-साधना के समानांतर दूसरी ओर जारी है शक्ति की भौतिक-साधना, जिसका लक्ष्य है प्रभुसत्ता की प्राप्ति। पहली साधना के बल पर हमने आज़ादी की लड़ाई लड़ी, जिसकी फलश्रुति थी हमारी सार्वभौम-स्वतंत्रता और जनता द्वारा, जनता के लिए, जनतांत्रिक-सरकार की स्थापना। शुरुआती दौर में हमारे चुने गये ज्यादातर प्रतिनिधि स्वातंत्र्य-संघर्ष की उपज थे अत: उनके संसदीय-आचरण की गरिमा ने जनता की सरकार के मानक बनाये। पक्ष-विपक्ष दोनों ही तरफ उपस्थित सांसद अपने **गम्भीर अध्ययन और चिन्तन के आधार पर** सप्रमाण मुद्दे उठाते थे, विचारोत्तेजक बहसें होती थीं जिसका सार्थक परिणाम निकलता था। धीरे-धीरे आरम्भिक युग का अवसान हो गया और आरम्भ हुआ सत्ता का केन्द्रीकरण जो क्रमश: जनतंत्र के 'आपात्काल' तक पहुँच गया। उसके बाद हुए चुनावों में जन-आक्रोश फूटा और सत्ता का विकेन्द्रीकरण आरम्भ हो गया। राष्ट्रीय पार्टियों को चुनौती देते हुए क्षेत्रीय दल उभरने लगे जो प्रान्तीय-सत्ता पर काबिज़ होने के बाद क्रमश: केन्द्र की ओर बढ़ चले। केन्द्रीय सरकार के गठन के लिए पिछले तीन दशकों में कई बार गठबंधन हुए हैं। आज 'रा-ज-ग' और 'सं-प्र-ग' मौजूद हैं, तीसरा मोर्चा बन रहा है। भारत जैसे विशाल देश के जनतंत्र के लिए तो यह बेहतर स्थिति है किन्तु बदतर स्थिति यह है कि हमारे जनतांत्रिक लचीलेपन का लाभ उठाकर कई बार अशिक्षित, उच्छृंखल, अपराधी-वर्ग के लोग भी चुन लिए जाते हैं। पिछली लोकसभा के अध्यक्ष ने सांसदों के अमर्यादित आचरण पर उन्हें शापित करते हुए कहा—''**आपका आचरण निंदनीय है, आप लोकतंत्र का काम तमाम कर रहे हैं और देश की जनता सब कुछ देख रही है। मैं उम्मीद करता हूँ कि जनता आपको पहचान ले और सबक सिखाये, आप सब चुनाव हार जायें।**'' राजनयिक उच्छृंखलता के विरोध में एक वरिष्ठ राजनेता का यह आन्तरिक विक्षोभ वस्तुत: जनता का विक्षोभ है। संसद में अपने प्रतिनिधि चुनकर भेजने वाली जनता आज दिग्भ्रांत है। कई बार सत्ता के बदलते समीकरणों के बीच चुनाव होते हैं, सरकारें बनती हैं और जनता उसे नियति मानकर ढोती है। इस यथास्थिति से बाहर निकलना होगा और राष्ट्रीय-सांस्कृतिक नीति से संचालित समग्र-विकास की वैचारिक प्रतिबद्धता के साथ शक्ति की मौलिक कल्पना करनी होगी, कठोर साधना करनी होगी तभी प्राप्त होगा 'जनता के लिए जनता का लक्ष्य'।

होगी जय होगी जय
हे पुरुषोत्तम नवीन!

सर्वेक्षण

बूम-बूम—जब से हमने अपने बाज़ार का दरवाज़ा खोला है, हमारे यहाँ अक्सर

शेष पृष्ठ 2 पर

किताब पढ़ें तनाव दूर करें

आज आपाधापी से भरी जिन्दगी में हर आयु के लोग तनावग्रस्त हैं। बस, प्रत्येक व्यक्ति के तनाव का कारण अलग-अलग हो सकता है। मनोवैज्ञानिकों और मनोचिकित्सकों का कहना है कि तनाव यदि हमारे जीवन में लम्बे समय तक बरकरार रहे, तो यह न केवल हमारी खुशियाँ छीनता है, बल्कि आयु को भी कम कर देता है। तनाव के कारण कई शारीरिक समस्याएँ भी उत्पन्न हो जाती हैं।

हाल ही में स्पेन में हुए एक अध्ययन से पता चला है कि तनाव को दूर करने में किताबें सबसे अधिक सहायक होती हैं। अध्ययनकर्ताओं का कहना है कि अभी तक यह माना जाता था कि तनाव की स्थिति में मनपसन्द संगीत सुनने या लोगों से मिलने-जुलने पर तनाव कम होता है, लेकिन इस अध्ययन के नतीजे आश्चर्यजनक आए हैं। केवल 15-20 मिनट किताब पढ़ने से तनाव का असर करीब 65 प्रतिशत कम हो जाता है।

वैज्ञानिकों का कहना है कि तनाव को कम करने में कौन-सी विधियाँ सबसे अधिक कारगर साबित होती हैं, इस बात के परीक्षण के लिए हमने लगभग चार वर्ष तक लगातार अध्ययन किया। इस अध्ययन में लगभग 1200 व्यक्ति शामिल थे। अध्ययन में शामिल 50 प्रतिशत लोगों को प्रतिदिन कुछ देर मनपसन्द संगीत सुनने और लोगों से मिलने-जुलने के लिए कहा जाता था, जबकि इतने ही लोगों को प्रतिदिन अलग-अलग विषयों की किताबें पढ़ने के लिए कहा गया। इन लोगों की माह में दो बार ब्रेन मैपिंग की जाती थी। इस अध्ययन में न केवल सरकारी कार्यालयों में काम करने वाले व्यक्ति शामिल थे, बल्कि प्राइवेट संस्थानों में कार्यरत लोग भी सम्मिलित थे। ब्रेन मैपिंग से पता चला कि जो लोग किताबें पढ़ते थे, उनके दिमाग में तनाव का असर काफी कम था, जबकि अन्य लोगों के तनाव का स्तर मामूली रूप से ही कम होता था।

पुस्तकें

डोलती हैं लोल नहरें
खोलती हैं कान बहरे
बोलती हैं भेद गहरे
ज्ञान का सागर उठाती हैं।

रूढ़ियों में मौन बन्दी
और जिनकी दृष्टि अन्धी
चाह लें तो ज्ञानगन्धी
कुछ नया करके दिखाती हैं।

क्रान्ति का उद्घोष क्या है,
मनुजता का कोष क्या है,
गुण कहो या दोष क्या है
बुद्धि का वैभव बढ़ाती हैं।

—**अमलदार 'नीहार',** बलिया

पृष्ठ 1 का शेष

बूम आते रहते हैं। करीब एक दशक पहले यूरोप में आयोजित दो भिन्न प्रतियोगिताओं में, दो भारतीय युवतियाँ विश्व सुन्दरी चुनी गयीं, सौ करोड़ भारतीय बूम-बूम हो उठे। विश्व सुन्दरियों के नक्शेकदम पर ताल से ताल मिलाते हुए तमाम बहुराष्ट्रीय सौन्दर्य-उत्पाद हमारे बाज़ार में छा गये। विज्ञापन और विपणन का अंत:सम्बन्ध रंग लाया और बदलने लगी नौजवान पीढ़ी की अभिरुचि। रसोईं का रसमय स्वाद रेस्त्राँ की बलि चढ़ गया, कस्तूरी-केसर-चंदन और गुलाब की जगह, तरह-तरह के सेंट गमकने लगे, आत्मा का संगीत कर्ण-कटु कोलाहल में बदल गया। सांस्कृतिक स्तर पर धर्म, अध्यात्म, योग, ज्योतिष आदि को बाज़ार मिला, बूम आ गया। शिक्षा के क्षेत्र में 'आई-टी' की माँग बढ़ी, बूम आ गया। विदेशी निवेश लेकर कम्पनियाँ और शेयर बाज़ार बल्ले-बल्ले हो गये। देखते-देखते यह 'बूम' चारोंखाने चित्त होकर धड़ाम से गिरा और बाज़ार की साँस अटक गयी।

यह समय है सचेत होकर सोचने का। क्या हम सौ करोड़ जन सिर्फ बाज़ार हैं जिन्हें बहुराष्ट्रीय-प्रलोभनों के मॉल में लाकर आसानी से गुलाम बनाया जा सकता है? क्या हमारी संस्कृति विपणन की चीज़ है? क्या हमारी आत्मा बिकाऊ है?

जय हो.....—पिछले दिनों भारत की झोपड़पट्टी पर बनी एक हॉलीवुडीय फिल्म 'स्लमडॉग-मिलेनियर' को विश्व-प्रतिष्ठित फिल्म पुरस्कार 'ऑस्कर' से नवाज़ा गया। तभी से इस फिल्म के गाने की तर्ज पर पूरा देश जय-जयकार कर रहा है। पुरस्कार का स्वर्ण-प्रतीक लेकर झूम रहा है, नाच रहा है। क्या कभी हमने सोचा कि यह पुरस्कार क्यों और किसे दिया जा रहा है? एक विकासपरक देश की विकासशील प्रवृत्ति को रेखांकित किया जा रहा है या गर्हित स्थितियों, प्रवृत्तियों को? क्योंकर अंग्रेजी भाषा के वे स्वनामधन्य भारतीय लेखक ही पुरस्कृत किये जाते हैं जो हमारी सामाजिक कमजोरियों, बाढ़-सूखे आदि विभीषिकाओं से उपजी यंत्रणाओं, दारिद्र्य और भौतिक-चाहत के बीच पनपती सेक्सुअल-विकृतियों आदि का ही चित्रण करते हैं? इस तरह के अनेकों सवालों के बीच हमें अपने 21वीं सदी के वर्तमान में भी गौरांग-महाप्रभुओं की उपनिवेशवादी-मानसिकता साफ नज़र आती है। जिनकी दृष्टि में आम-भारतीय-जन 'नेटिव / स्लेव / डॉग' रहा है। पुरस्कृत फिल्म का नाम 'स्लम-डॉग' की जगह 'स्लम-ब्वॉय' भी हो सकता था (तब शायद यह फिल्म पुरस्कार की पंक्ति में भी न होती)। किन्तु नहीं, 'ब्वॉय' यानी बच्चे, मनुष्यों के होते हैं, कुत्तों के नहीं। इसी औपनिवेशिक नस्लवादी-मानसिकता और दृष्टि ने भारतीय झोपड़ों में रहने वाले कुत्तों के युवा होते पिल्लों को अपनी प्रतिष्ठापरक भाषा 'अंग्रेजी' में 'डॉग'-त्व प्रदान करते हुए प्रतिष्ठा दी, पुरस्कृत किया, कुछ पैसे देकर दुनिया की सैर करा दी, और क्या चाहिए? कुत्तों! खाओ-पियो, मौज करो, नाचो-गाओ झूम-झूम—जय हो, जय हो!

इस उपनिवेशवादी-दृष्टि, अंग्रेजी-भाषा-प्रतिष्ठा और नस्लवादी मानसिकता के इस सांस्कृतिक-आक्रमण का प्रतिरोध अनिवार्य है। भारतीय साहित्यकारों, मीडिया और संस्कृतिकर्मियों को एकजुट होकर अपनी अस्मिता के लिए संघर्ष करना होगा। इंकलाब की भाषा में बता देना होगा—

सितम भी सहना, दुआ भी देना
वो बेक़सी का गया ज़माना,
तुम्हें हो ज़ुर्रत गिराओ बिजली
बना रहा हूँ मैं अपना आशियाना।

—परागकुमार मोदी

थके हुए शब्दों का संग्रह नहीं है भाषा

—डॉ० गिरिराज किशोर

भाषा एक चमत्कार की तरह मनुष्य के सामने आई। साहित्य भाषा का परिष्कार है। असल में, जब भाषा सामने होती है, तो उसे हम उसी तरह जानते-पहचानते हैं, जैसे शक्लें पहचानी जाती हैं। वह भाषा के साथ प्रतीति मात्र होती है। हम जानते रहते हैं कि इस आदमी के साथ हमारा कोई सम्बन्ध है। हम इसे पहचानते हैं। लेकिन उन जाने-पहचाने, आप कह सकते हैं परखी हुई शक्लों को कितनी अंतरंगता से जानते-बूझते हैं? शायद आंशिक रूप से। भाषा का सम्बन्ध भी मनुष्य के साथ लगभग इसी तरह का है। हम भाषा को केवल इतना ही समझते हैं, जितना दैनिक व्यवहार में उससे सम्बन्ध रहता है। यानी बोलचाल में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली से सम्पर्क रहता है। जैसे सम्पर्क मात्र मनुष्य को जानना नहीं होता, वैसे ही संवाद या अभिव्यक्ति के स्तर पर भाषा का प्रयोग उसे जानना नहीं होता।

आप पूछेंगे कि मनुष्य का भाषा से रिश्ता क्या है। इसका जवाब आसान नहीं। भाषा इन्सान की मूलभूत जरूरत है। वह चाहे लिपि विकसित कर पाए या नहीं, संवाद की भाषा विकसित करने में कभी चूक नहीं करता। भले ही वह सीमित उपयोग की हो। कबीलाई भाषाएँ भले ही बोली तक सीमित हों, लेकिन वे प्राकृतिक ध्वनियों का परिष्कृत समुच्चय हैं। आरम्भ में तो सभी भाषाओं के साथ कमोबेश यही हुआ होगा। लेकिन जैसे-जैसे बोलियों ने भाषा का रूप ग्रहण करना शुरू किया, तो मनुष्य की आन्तरिक प्रतिक्रियाओं या कहिए एहसासों का उसमें समावेश होता गया। पशुओं और पक्षियों की ध्वनियों में भी उनकी संवेदनाओं का मिश्रण रहता है, तभी तो वे कभी करुण, कभी कर्कश समयानुकूल ध्वनियाँ निकालते हैं। पपीहे की करुण ध्वनि हमारे साहित्य का सर्वाधिक आर्त स्वर मानी जाती है। डहगल नाम के पक्षी के बारे में कहा जाता है कि वह सुबह-सुबह इस तरह मनोहारी सीटी बजाता है, जैसे बाँस के दरख्तों के बीच से हवा गुजरती हुई बोलती है। जैसे-जैसे दिन चढ़ता है, वैसे-वैसे उसके स्वर की कर्कशता बढ़ती जाती है। मेरे कहने का मतलब है कि भाषा बाह्य वस्तु नहीं है, जिसे हम एक उपकरण या यंत्र के रूप में इस्तेमाल कर सकें या पुराना समझकर फेंक या बदल सकें। भले ही पशु-पक्षियों की भाषा हमारी भाषा से बिलकुल भिन्न हो, लेकिन उसे छोड़कर क्या वे जी सकते हैं। शायद नहीं। आदमी भले ही जी ले। उस स्थिति में उसकी अभिव्यक्ति का माध्यम दैहिक हो जाएगा, जो उसे अव्यक्त और अपूर्ण बना देगा।

भाषा का मूल आधार संवेदना है और उद्देश्य अभिव्यक्ति का विकास, विस्तार, सम्प्रेषण और परिमार्जन। दैहिक भाषा यानी बॉडी लैंग्वेज, जिसका ऊपर जिक्र किया गया है। हाथ, पैर, मुखाकृतियाँ तो उसके माध्यम हैं ही, पर आँखें सबसे अधिक मुखर होती हैं। उनकी सीमित, पर सटीक भाषा है। इस सबके बावजूद वे अभिव्यक्तियाँ न भाषा प्रमाण बन सकती हैं और न संवेदना का विस्तार करके उसमें कुछ जोड़ती हैं।

भाषा का अर्थ है अक्षर समुच्चय और अर्थ-समीकरण। उनका विभन्न रूपों में सम्प्रेषण तथा प्रक्षेपण। हर अक्षर-समुच्चय की संवेदना उसी तरह उससे जुड़ी होती है, जैसे प्रत्येक जाति के आम के साथ उसका स्वाद या रस। वह दूसरे अक्षर-समुच्चय यानी शब्द के साथ मिलकर नए-नए रूप धरती रहती है। घटती-बढ़ती है। पिता का न रहना और माँ का न रहना सम्बन्धित व्यक्ति से लेकर समाज तक अलग सन्दर्भों में सम्प्रेषित होगा। पिता ने बेटी को प्यार किया, माँ ने किया, प्रेमी ने प्रेमिका को किया। प्यार एक ही शब्द है, संवेदना की अभिव्यक्ति के स्तर भी वजन में समान है, पर हर रिश्ते के साथ प्रतिक्रिया अलग-अलग होती है। भाषा एक ऐसा पिटारा है, जिससे नए-नए शब्द और नए-नए अर्थ जादूगर की तरह निकलते जाते हैं और वे मात्र शब्द ही नहीं हैं, उनके साथ संवेदना भी आती हैं। वह घटती-बढ़ती रहती है। जब घटने लगती है, तो आयु की तरह वह भी समाप्त हो जाती है। यानी संवेदनाहीन शब्द विलुप्त होते जाते हैं। 'माँ', जब तक प्रजनन-प्रक्रिया रहेगी, यह शब्द रहेगा। ताज्जुब की बात है कि लगभग सभी भाषाओं में 'म' से ही मातृत्व संबोधक संज्ञाएँ माँ, माता, मदर आदि बनी हैं। 'म' ही वह मूल धातु है, जिसमें 'माँ' बसती या उससे निकलती है। आश्चर्य होता है, जब आदमी का बच्चा भी पहला उच्चारण 'मा' या 'म' करता है और बकरी का बच्चा भी 'म' या 'मैं'.....करता है। बच्चा 'माता' या 'मॉम' नहीं कहता। ये शब्द कल्चर्ड संस्करण हैं।

यहाँ मैं गालियों का भी जिक्र करना चाहता हूँ। भले ही उन्हें आप संवेदना न मानें, पर गालियाँ भी मनुष्य के गुस्से या घृणा को या उससे भी अधिक कन्संट्रेटेड आक्रोश भाव की अभिव्यक्ति हैं। उस भाव को अभिव्यक्त करने वाला मंत्र। मंत्र साधे जाते हैं। इसलिए इन्हें क्रोध के मनोभाव की शाब्दिक सिद्धि भी कहा जा सकता है, जो तात्कालिक प्रतिक्रिया के रूप में आंतरिक विस्फोट की तरह अभिव्यक्त होती हैं। आशय यह है कि भाषा केवल शब्द संचयन नहीं है और न संभाषण का कोई मानव निर्मित उपकरण है। संवेदना उसकी आत्मा है। साहित्य उसे जानने-पहचानने और बढ़ाने की जुस्तजू में रात-दिन लगा रहता है। अनुभव के स्तर पर भी और अभिव्यक्ति के स्तर पर भी। भाषा और संवेदना साहित्य का आविष्कार है, जो पता नहीं कब से चल रहा है और कब तक चलता रहेगा। शायद यह अनन्त प्रक्रिया है। **—'हिन्दुस्तान' से साभार**

स्वाधीन राष्ट्र के नागरिकों में अपनी भाषा संस्कृति के प्रति जो दर्प होता है उसका यहाँ नितान्त अभाव है। विश्व का अन्य कोई भी राष्ट्र ऐसा नहीं है, जिसकी सरकार का कार्य उसकी अपनी निजी भाषा में न होता हो।

—डॉ० मित्रेशकुमार गुप्त

फार्म 4

(नियम 8 देखिए)

1. प्रकाशन स्थान	वाराणसी
2. प्रकाशन अवधि	मासिक
3. मुद्रक का नाम	अनुरागकुमार मोदी
(क्या भारत का नागरिक हैं?)	जी हाँ
(यदि विदेशी हैं तो मूल देश)	
पता	चौक, वाराणसी
4. प्रकाशक का नाम	अनुरागकुमार मोदी
(क्या भारत का नागरिक है?)	जी हाँ
5. सम्पादक का नाम	परागकुमार मोदी
(क्या भारत का नागरिक हैं?)	जी हाँ
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	विश्वविद्यालय प्रकाशन चौक, वाराणसी

मैं अनुरागकुमार मोदी एतद्द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

प्रकाशक के हस्ताक्षर

(दिनांक 31 मार्च, 2009) **(अनुरागकुमार मोदी)**

किताबों में कॅरिअर

यदि आप पढ़ने के शौकीन हैं और यह सोचते हैं कि आप किताबों में कॅरिअर बना सकते हैं, तो पुस्तक-प्रकाशन उद्योग (बुक पब्लिशिंग इंडस्ट्री) में आपके लिए है बेहतर कॅरिअर विकल्प।

किताब हम सबके जीवन का एक जरूरी हिस्सा है, लेकिन एक सच यह भी है कि कम ही लोग किताबों के द्वारा अपना कॅरिअर बनाने के बारे में सोचते हैं। कम ही लोग पुस्तक प्रकाशन उद्योग में अपने भावी जीवन का रास्ता ढूँढ़ते हैं, जबकि इसमें कॅरिअर की अपार सम्भावनाएँ हैं। अपार सम्भावनाएँ इसलिए हैं, क्योंकि वैश्वीकरण और सूचना क्रान्ति ने भारत में प्रकाशन उद्योग में एक नई जान फूँक दी है।

खासतौर से इसलिए भी, क्योंकि दुनिया के नामी प्रकाशकों द्वारा की जा रही आउटसोर्सिंग के कारण भारत के प्रकाशन उद्योग को बहुत लाभ हुआ है। यदि आँकड़ों में देखें और अच्छी तरह परखें, तो एक ताजा रिपोर्ट के अनुसार, भारतीय प्रकाशन उद्योग दस प्रतिशत की वार्षिक दर से बढ़ रहा है। यदि आप रचनात्मक हैं, पुस्तकों में आपकी रुचि है, तो यह आपके लिए रोजगार का एक अच्छा विकल्प हो सकता है।

खूब हैं अवसर—तेजी से विकसित हो रहे प्रकाशन उद्योग में न केवल सम्पादकीय विभाग, बल्कि अन्य विभागों में भी रोजगार की बेहतरीन सम्भावनाएँ हैं। एक प्रकाशन समूह के सम्पादक का कहना है, ''प्रिण्ट मीडिया संचार के अन्य माध्यमों जैसे ऑडियो या वीडियो की अपेक्षा ज्यादा लम्बे समय तक अपना प्रभाव छोड़ सकती है। क्योंकि आज भी हम इन माध्यमों की अपेक्षा प्रिण्ट-माध्यमों को ही अपना रेफरेंस-गाइड मानते हैं। यही कारण है कि आज अलग-अलग विषयों से जुड़े प्रकाशक इस उद्योग में आ रहे हैं।'' वैसे, प्रकाशन उद्योग में आप निम्न रूप में सम्भावनाओं की तलाश कर सकते हैं—

सम्पादन—एक प्रकाशन संगठन में सम्पादकीय विभाग सबसे महत्त्वपूर्ण होता है। यहीं पुस्तक को लिपिबद्ध करने (स्क्रिप्टिंग) से लेकर अन्तिम छपाई से जुड़े तमाम छोटे-बड़े निर्णय लिए जाते हैं। यदि आप अलग-अलग विषयों की समझ रखते हैं, भाषा पर आपकी पकड़ है और परिपक्व निर्णय लेने की क्षमता भी आपमें है, तो सम्पादन का काम आपके लिए सर्वश्रेष्ठ सिद्ध हो सकता है।

अनुवादक—आज तमाम छोटे-बड़े प्रकाशन संगठन हैं, जहाँ अनुवादक की आवश्यकता पड़ती है। लेकिन इसके लिए आवश्यक है कि आपकी भाषा अच्छी हो और आप विभिन्न विषयों की व्यापक समझ भी रखते हों।

इलस्ट्रेटर्स—ऐसे उम्मीदवार, जो कलात्मक पृष्ठभूमि से हैं या जो पुस्तक के कला-पक्ष के प्रति ज्यादा झुकाव रखते हैं, वे प्रकाशन उद्योग में इलस्ट्रेटर्स के रूप में काम कर सकते हैं।

प्रूफ-रीडर्स—ये सम्पादकीय विभाग से ही जुड़े होते हैं। इनका काम पुस्तक की विषय-वस्तु में पाई जाने वाली अशुद्धियों को दूर करना होता है।

वितरण और मार्केटिंग—पुस्तक के विक्रय और वितरण से जुड़े तमाम कार्यों का दायित्व इसी विभाग का होता है। इसके अतिरिक्त विषय-वस्तु विशेषज्ञ के रूप में, छपाई, उत्पादन विभाग आदि में भी रोजगार के बेहतरीन अवसर हैं। हाँ, जहाँ तक वेतन की बात है, तो यह संस्थान, पद और आपके अनुभवों के अनुसार ही तय होता है।

योग्यता—प्रकाशन से जुड़े अधिकतर पाठ्यक्रम स्नातकोत्तर स्तर के होते हैं, इसलिए यह आवश्यक है कि आप स्नातक हों। एक प्रकाशन समूह के वरिष्ठ सम्पादक का कहना है, ''आज प्रकाशन उद्योग एक नए दौर से गुजर रहा है। इसलिए सूचना-क्रान्ति और कम्प्यूटरीकरण के इस युग में इस उद्योग में केवल वे लोग ही ज्यादा बेहतर कर सकते हैं, जो न केवल प्राकृतिक रूप से निपुण हों, बल्कि कुशल भी हों।''

इस प्रकार कहा जा सकता है कि यदि आप समय के अनुरूप खुद अपनी योग्यता बढ़ाते हैं, तो आपको किसी भी क्षेत्र में रोजगार मिलने में परेशानी नहीं होगी।

महत्त्वपूर्ण योग्यता

- किताबों से लगाव / बढ़िया कम्युनिकेशन स्किल्स / विश्लेषण करने की क्षमता / सांस्कृतिक सजगता व समस्या समाधान / बेहतर बिजनेस-सेंस व टीमवर्क एबिलिटी / नई-नई प्रिण्टिंग टेक्नोलॉजी की जानकारी।

पाठ्यक्रम

- डिप्लोमा कोर्स इन प्रिंण्टिग टेक्नोलॉजी एण्ड मैनेजमेंट (दो वर्षीय)
- पीजी डिप्लोमा कोर्स इन प्रिंण्टिग एण्ड पब्लिशिंग (एक वर्षीय)
- पीजी डिप्लोमा कोर्स इन बुक पब्लिशिंग (तीन माह)
- पोस्ट ग्रेजुएट सर्टिफिकेट कोर्स इन कॉपी एडिटिंग एण्ड प्रूफ रीडिंग
- सर्टिफिकेट कोर्स इन क्रिएटिव राइटिंग
- सर्टिफिकेट कोर्स इन बाइन्डिग एण्ड फिनिशिंग
- ट्रेनिंग कोर्स इन पब्लिशिंग (एक माह)

प्रशिक्षण संस्थान

- दिल्ली यूनिवर्सिटी (www.du.ac.in)
- नेशनल बुक ट्रस्ट, दिल्ली (www.nbtindia.org)
- इंस्टीट्यूट ऑफ बुक पब्लिशिंग, दिल्ली (www.ibpindia.org)
- यूनिवर्सिटी ऑफ कोलकाता, वेस्ट बंगाल (www.caluniv.ac.in)
- अन्नामलाई यूनिवर्सिटी, तमिलनाडु (www.annamalaiuniversity.ac.in)
- महात्मा गांधी यूनिवर्सिटी, कोट्टायम, तमिलनाडु (www.mguniversity.edu)

असीम हैं सम्भावनाएँ

प्रश्न : *कॅरिअर की दृष्टि से पुस्तक-प्रकाशन उद्योग में क्या सम्भावनाएँ हैं?*

उत्तर : कई ऐसे कारण हैं, जिनकी वजह से प्रकाशन उद्योग में कॅरिअर की असीम सम्भावनाएँ हैं। जैसे, मॉल कल्चर। दरअसल, पेंटालून्स (डिपोट), रिलायन्स, क्रॉसवर्ड, लैंडमार्क, ओडिसी आदि कई छोटे-बड़े चेन स्टोर्स हैं, जो कि आज धीरे-धीरे देश भर में फैल रहे हैं। दरअसल, इनकी वजह से ही क्षेत्रीय भाषाओं की पुस्तकों को भी तेजी से बढ़ावा मिल रहा है। इसके अलावा, शिक्षण-संस्थानों का बड़े पैमाने पर खुलना, स्टूडेंट्स की संख्या में हो रही लगातार वृद्धि, भारतीय लेखकों की किताबों को अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति मिलना जैसे तमाम ऐसे कारण हैं, जिनकी वजह से प्रकाशन-उद्योग आज अभूतपूर्व मुकाम पर पहुँच चुका है। केवल यही नहीं, भारत में कम लागत में मिल रही श्रेष्ठ सर्विस और बेहतर टैलेन्ट के कारण भी विश्व की जानी-मानी पब्लिशिंग कम्पनियाँ अपना क्षेत्रीय कार्यालय भारत में खोल रही हैं। इसलिए यदि आप अपेक्षित योग्यता रखते हैं, तो विभिन्न विषयों से जुड़े सम्पादक, विषय विशेषज्ञ, मार्केटिंग एण्ड सेल्स और प्रमोशन मैनेजर जैसे आकर्षक कार्य हासिल कर सकते हैं।

प्रश्न : *देश भर के विभिन्न शिक्षण-संस्थानों में पुस्तक-प्रकाशन से सम्बन्धित कौन-कौन से पाठ्यक्रमों का संचालन इन दिनों हो रहा है?*

उत्तर : पेशेवरों की आवश्यकता को देखते हुए देश के जाने-माने शिक्षण-संस्थानों में इससे सम्बन्धित पाठ्यक्रम चलाए जा रहे हैं। जैसे—कोलकाता यूनिवर्सिटी, पब्लिशर्स एण्ड बुकसेलर्स गिल्ड ऑफ कोलकाता के साथ मिल कर पीजी डिप्लोमा कोर्स ऑफ बुक पब्लिशिंग कोर्स, पुणे यूनिवर्सिटी, अखिल भारतीय मराठी पब्लिशर्स असोसिएशन के साथ मिल कर पुस्तक प्रकाशन का सर्टिफिकेट कोर्स का संचालन कर रही है। इसके अलावा, नेशनल बुक ट्रस्ट न केवल दिल्ली में, बल्कि देश के दूसरे भागों में भी बुक पब्लिशिंग से जुड़े नियमित कोर्स का संचालन कर रही है। इग्नू, फेडरेशन ऑफ इण्डियन पब्लिशर्स के साथ मिल कर जुलाई-2009 से पुस्तक प्रकाशन में पीजी डिप्लोमा का कोर्स शुरू करने जा रही है।

प्रश्न : *किस तरह के प्रतिभागी इस उद्योग में बेहतर कर सकते हैं?*

उत्तर : यह अलग-अलग विभाग से जुड़ी आवश्यकताओं पर निर्भर करता है। लेकिन आपमें धैर्य, कार्य के प्रति प्रतिबद्धता और अपनी एक 'दृष्टि' अवश्य होनी चाहिए।

सूचना प्रौद्योगिकी युग में राजभाषा 'हिन्दी' का प्रयोग अब अत्यन्त सुगम

सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी के प्रति जागरूकता तथा उसके प्रयोग में गति लाने के उद्देश्य से केन्द्र सरकार के मंत्रालय/विभाग/कार्यालय/उपक्रम/बैंक आदि गत वर्षों में हिन्दी दिवस/सप्ताह/पखवाड़ा/मास आदि मनाते रहे हैं। पिछले कुछ समय में व्यावसायिक कारणों से विज्ञापनों में एवं दूरदर्शन पर मनोरंजक कार्यक्रमों में हिन्दी को अपनाने की दिशा में ध्यान देने योग्य प्रगति हुई है। केन्द्र सरकार के कार्यालयों में हिन्दी को राजभाषा के रूप में अपनाने की वृद्धि हुई है लेकिन इस वृद्धि दर में विशेषतया लिखित रूप से हिन्दी को अपनाने की वृद्धि में वैसी तेज़ी नहीं दिखी है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार से जुड़ी समितियों के अनुसार अभी भी काफी हद तक अँग्रेज़ी का प्रयोग ही प्रतिष्ठा एवं सम्मान से जुड़ा है जिसमें बदलाव लाकर राजभाषा के प्रयोग को प्रतिष्ठा व सम्मान से जोड़कर ही राजभाषा के प्रयोग में तेज़ी लाई जा सकती है।

आज के सूचना प्रौद्योगिकी युग में राजभाषा प्रयोग को सूचना प्रौद्योगिकी का पूरा लाभ देकर ही हिन्दी को राजभाषा बनाने का लक्ष्य पूरा किया जा सकता है। विंडो 2000 एवं उसके बाद के संस्करण वाले ऑपरेटिंग सिस्टमयुक्त कम्प्यूटरों में भाषा एनकोडिंग के अन्तर्राष्ट्रीय एवं भारतीय मानक, नामत: यूनिकोड के अनुसार हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में सभी तरह के दस्तावेज/फाइल तैयार करने की सुविधा अंतर्निहित होती है। इन कम्प्यूटरों पर इस यूनिकोड समर्थित सुविधा को सक्रिय करते ही यूनिकोड समर्थित फॉन्ट् (मंगल) एप्लीकेशन सॉफ्टवेयरों (वर्ड, एक्सेल, पॉवर प्वाइंट) में आपके प्रयोग के लिए उपलब्ध हो जाता है। इस फॉन्ट् या अन्य कोई भी यूनिकोड समर्थित फॉन्ट् प्रयोग करने से हम फॉन्ट्स इन्कॅम्पैटॅबिलिटि से जुड़ी तमाम समस्याओं से तो बचते ही हैं, सामान्य खोज, इंटरनेट खोज आदि सुविधाएँ भी अँग्रेज़ी भाषा की सुविधाओं की भाँति ही हमें उपलब्ध हो जाती हैं तथा आप प्रयोग किए गए फॉन्ट् की परवाह किए बिना ई-मेल भेज सकते हैं और अपनी वेबसाइट पर हिन्दी सामग्री प्रस्तुत कर सकते हैं। आपकी मेल/वेब सामग्री सही-सही दिखेगी क्योंकि यह किसी खास फॉन्ट् पर निर्भर न होकर एक मानक भाषा एनकोडिंग के अनुसरण पर निर्भर होगी।

फॉन्ट् इन्कॅम्पैटॅबिलिटि एक बड़ी समस्या रही है। इस समस्या के अंतर्निहित समाधान के होते हुए भी कई कार्यालयों में हिन्दी प्रयोग के लिए जो सॉफ्टवेयर लगाये गए हैं उनमें से अधिकांश मानक एनकोडिंग (यूनिकोड) से भिन्न एनकोडिंग फॉन्ट् प्रयोग करने के कारण अनेक समस्याएँ पैदा कर रहे हैं जिनमें फाइल को एक कम्प्यूटर से दूसरे कम्प्यूटर पर हस्तांतरित करने में आने वाली समस्या प्रमुख है। इस कृत्रिम समस्या से बचने के लिए अब केवल मानक (यूनिकोड) एनकोडिंग समर्थित सॉफ्टवेयर/फॉन्ट्स ही प्रयोग किए जाने चाहिए। वे पुरानी नॉन-यूनिकोड फाइलें, जो कॉपी-पेस्ट के लिए या अद्यतित करके प्रयोग की जानी हैं, सरकार द्वारा हिन्दी के लिए नि:शुल्क डाउनलोड (http://ildc.gov.in/hindi/downloadhindi.htm) के लिए उपलब्ध कराए गए 'परिवर्तन' सॉफ्टवेयर द्वारा यूनिकोड में परिवर्तित की जा सकती हैं। इस वेबसाइट से आप 150 से ज्यादा यूनिकोड समर्थित फॉन्ट्स, की-बोर्ड को इंस्क्रिप्ट, रेमिंग्टन तथा फोनेटिक रूप में प्रयोग करने के लिए सॉफ्टवेयर तथा अन्य उपयोगी सॉफ्टवेयर भी डाउनलोड कर सकते हैं।

उपरोक्त जानकारी राजभाषा विभाग की वेबसाइट (rajbhasha.gov.in) पर 'फॉन्ट् समस्या समाधान' शीर्षक के अंतर्गत भी दी गई है। आवश्यकता पड़ने पर राष्ट्रीय सूचना-विज्ञान केन्द्र (NIC) द्वारा विभिन्न मंत्रालयों/विभागों में तैनात किए गए अधिकारियों से या राजभाषा विभाग के तकनीकी कक्ष (दूरभाष : 24619860, e-mail : techcellol@nic.in) से भी कम्प्यूटर पर हिन्दी प्रयोग में आ रही समस्याओं, हिन्दी में वेबसाइट तैयार करने तथा नि:शुल्क सॉफ्टवेयर को प्राप्त करने सम्बन्धी जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

कोई विदेशी भाषा हमारी संस्कृति और हमारे स्वरूप तथा भाव को व्यक्त करने की शक्ति नहीं रखती। देश की स्वतन्त्रता के लिए हिन्दी का राष्ट्रभाषा होना आवश्यक है।

—डॉ० राजेन्द्र प्रसाद

'सम्पादन' विषय पर द्वितीय-सघन-अध्ययन-सत्र

पुस्तक प्रकाशन संस्थान (इंस्टीट्यूट ऑफ बुक पब्लिशिंग, दिल्ली) द्वारा आगामी 3 से 10 जून 09 की अवधि में सम्पादकों के लिये छ: दिवसीय सघन-अध्ययन-कार्यक्रम, दिल्ली के 'इण्डिया-इंटरनेशनल-सेंटर' में आयोजित किया गया है। इस अध्ययन हेतु आवेदन की अन्तिम तिथि 30 अप्रैल 09 है। विशेष विवरण के लिये : www:ibpindia.org

महाश्वेता देवी : चौरासीवें में 1084वें की माँ

साठ हजार डालर राशिवाले मैन बुकर इंटरनेशनल (लाइफ टाइम एचीवमेंट) प्राइज के लिए जिन 14 लेखकों का नाम चल रहा है, उनमें भारतीय लेखिका महाश्वेता देवी भी हैं। उनका कहना है कि कोई बड़ा से बड़ा पुरस्कार भी उन्हें स्पर्श नहीं करता। हाँ पुरस्कार में बड़ी राशि मिलती है तो वह जरूरतमंद आदिवासी अंचल के विकास में जरूर काम आएगी।

मैगसेसे व ज्ञानपीठ समेत देश-विदेश के करीब बत्तीस पुरस्कारों व किताबों की रायल्टी से अब तक उन्हें 65 लाख रुपए मिले, जिसमें 62 लाख उन्होंने आदिवासी अंचलों के विभिन्न जन-कल्याणकारी कार्यों में लगा दिए। अकेले मैगसेसे पुरस्कार की राशि उन्होंने पुरुलिया के खेड़िया शबर आदिवासी समिति को दे दी तो सार्क अवार्ड की राशि नंदीग्राम के पीड़ित अंचल में लगा दी। गुजरात के दंगा पीड़ितों की मदद के लिए नकद व राहत सामग्री लेकर महाश्वेता 2002 में सात बार गुजरात गईं थीं। पैसों के मामले में गुरु नानक देव का तेरा-तेरा सन्दर्भ उनका आदर्श है। इसीलिए जो भी राशि उनके घर आती है, उसका अधिकतर हिस्सा आदिवासी अंचलों में या पीड़ित अंचलों में चला जाता है। संचय के नाम पर उनके बैंक एकाउंट में कुछ हजार रुपए हैं। वे आज भी कोलकाता में भाड़े के घर में रहती हैं।

'1084वें की माँ 84वें' वर्ष में चल रही हैं और लम्बे समय से डायबिटीज व रक्तचाप की मरीज हैं, पर इस अवस्था में भी महाश्वेता देवी जनांदोलनों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेती हैं। उनके शब्द उनके कर्म के पीछे भागते हैं। उनके जीवन का उत्तर पक्ष आदिवासियों की सेवा व उपासना में ही बीता है। इसीलिए अरण्यजीवी उन्हें अपनी माँ कहते हैं। वे महाअरण्य की माँ हैं। उनकी इच्छा है कि किसी आदिवासी अंचल में जंगल पुत्रों के बीच काम करते हुए ही उनकी आखिरी साँस निकले। उन्होंने अपनी यह इच्छा Journeying with Mahasweta Devi नामक फिल्म में जताई है। वे नहीं चाहतीं कि मरने के बाद उनकी अंत्येष्टि हो। वे चाहती हैं कि मरने के बाद जमीन में उन्हें दफनाया जाए और यदि पुरुलिया में नहीं दफनाया जाता तो गुजरात के घुमंतू आदिवासी अंचल में दफनाया जाए।

महाश्वेता समाज में गैर बराबरी और किसी भी तरह के अन्याय के खिलाफ भी पूरे दमखम के साथ संघर्ष करती हैं। वे खामोशी के साथ आती हैं और शोषितों के दु:खों की सलीब को किसी और कथित मसीहा के कंधों पर रखने के बजाय अपने कंधे पर रखकर अंतहीन यात्रा पर निकल पड़ती हैं।

सम्मान-पुरस्कार

राष्ट्रपति ने पद्म सम्मान से हस्तियों को किया अलंकृत

नई दिल्ली। राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल ने मंगलवार 31 मार्च को विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट योगदान देने वाली हस्तियों को एक मेडल और प्रशस्ति पत्र प्रदान कर पद्म पुरस्कारों से सम्मानित किया। इस अवसर पर 6 लोग पद्म विभूषण, 18 लोग पद्मभूषण और 45 लोग पद्मश्री से सम्मानित किये गए।

प्रसिद्ध वैज्ञानिक श्री अनिल काकोदकर और आनन्द बाजार पत्रिका ग्रुप के अध्यक्ष डॉ० अशोक शेखर गांगुली के अलावा मैरीटाइम के विशेषज्ञ डॉ० चन्द्रिकाप्रसाद श्रीवास्तव, भारतीय प्रशासनिक सेवा के पूर्व अधिकारी गोविंद नारायण, विख्यात चिकित्सक प्रो० जसवीर सिंह बजाज और भारतरत्न मदर टेरेसा के साथ काम कर चुकी प्रमुख समाजसेवी सिस्टर मेरी निर्मला जोशी को पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया। प्रसिद्ध गायिका शमशाद बेगम, शिक्षाविद् प्रो० ए० श्रीधरण मेनन, लार्सन एंड टूब्रो के अध्यक्ष अनिल कुमार मणिभाई नायक, शिक्षाविद् प्रो० सी०के० प्रहलाद, तमिल लेखक डी० जयकांत, प्रसिद्ध वैद्य देवेन्द्र त्रिगुणा, सिने कलाकार डॉ० जी० कृष्णा, अर्थशास्त्री डॉ० इन्द्रजीत कौर बरठाकुर, चिकित्सक लार्ड खालिद हमीद, अर्थशास्त्री प्रो० किरीट शांतिलाल पारिख, कवि और साहित्यकार कुँवर नारायण, टोक्यो विश्वविद्यालय में संस्कृत के मानद प्रो० मिनोरू हारा, भारत में टेलीकाम क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाने वाले सैम पित्रोदा, इंटेक के अध्यक्ष शशिकांत मिश्र, भरतनाट्यम कलाकार वी०पी० धनंजयन व श्रीमती शांता धनंजयन व मूर्तिकार वैद्यनाथ स्थपति पद्म भूषण से सम्मानित किये गये।

नई दुनिया के सम्पादक मण्डल के अध्यक्ष श्री अभय छजलानी, वरिष्ठ पत्रकार श्री आलोक मेहता, सिने कलाकार ऐश्वर्या राय बच्चन, अक्षय कुमार, कुमार शानू व गायिका पीनाज मसानी आदि को पद्मश्री सम्मान से सम्मानित किया गया।

पहली बार किसी तिब्बती विद्वान को मिला भारत सरकार का प्रतिष्ठित पद्म सम्मान

यह इतिहास है जो पहली बार भारत सरकार का अति प्रतिष्ठित सम्मान 'पद्मश्री' किसी तिब्बती विद्वान को मिला। मंगलवार 31 मार्च को केन्द्रीय उच्च तिब्बती विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी के कुलपति **प्रो० गेशे नवांग समतेन** को राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली में पद्मश्री सम्मान से विभूषित किया गया।

प्रो० गेशे नवांग समतेन ने एक बातचीत में कहा, ''मैं इस सम्मान को पाकर अभिभूत हूँ। मेरे साथ ही तिब्बत की जनता भी इस सम्मान से खुद को गौरवान्वित महसूस कर रही है। इस सम्मान के मिलने के साथ ही मेरी जिम्मेदारियाँ तिब्बती बौद्ध विद्या, संस्कृत के उत्थान के प्रति बढ़ गई है। तिब्बती विद्या का सम्मान मूलत: भारतीय विद्या का सम्मान ही है। तिब्बती विद्या का मूल नालंदा विश्वविद्यालय रहा है। यह भारतीय विद्या ही है। भारत सरकार ने यह सम्मान देकर बौद्ध विद्या के प्रति भारतीय जनता के सम्मान को उजागर किया है। विद्या मानव मात्र के कल्याण के लिए होती है। समाज का कल्याण शिक्षा से ही सम्भव है। शिक्षा का प्रसार अधिक से अधिक समाज में होना चाहिए। मेरी सामाजिक जिम्मेदारियों को इस सम्मान ने और बढ़ा दिया है।''

साहित्य अकादेमी के अनुवाद पुरस्कार

नई दिल्ली। साहित्य अकादेमी ने वर्ष 2008 के लिए अकादेमी अनुवाद पुरस्कारों के लिए चयनित विभिन्न भाषाओं की 16 पुस्तकों के नामों की घोषणा की।

सुश्री वीणापाणि महांति की ओड़िया कहानी 'पाटदेई' के असमिया अनुवाद 'चित्रित अंधकार' के लिए **श्री भारती नंदी**, महाकवि कृतिवास की बँगला रामायण 'कृतिवास रामायण' के बोडो अनुवाद 'स्नि-बिफान रामायण' के लिए **श्री प्रदीप राजा ब्रह्म**, श्री प्रणति मुखोपाध्याय की बँगला जीवनी 'क्षितिमोहन सेन ओ अर्द्धशताब्दीरा शांतिनिकेतन' के गुजराती अनुवाद के लिए **श्री मोहनदास पटेल**, श्रीमती अमृता प्रीतम की पंजाबी आत्मकथा 'रसीदी टिकट' के कन्नड़ अनुवाद 'रसीदी टिकीटु' के लिए **श्री हसन नईम सूरकोदा**, संत तिरुवल्लुवर के काव्य 'तिरुक्कुरल' के कोंकणी अनुवाद के लिए **श्री एन० पुरुषोत्तम मल्या**, श्री सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' के उपन्यास 'अपने-अपने अजनबी' के मलयालम अनुवाद 'अपरिचितर' के लिए **श्री जस्सी अरविंदाक्षन**, श्री यू०आर० अनंतमूर्ति के कन्नड़ उपन्यास 'संस्कार' के मणिपुरी अनुवाद के लिए **श्री वाई० इबोंचा सिंह**, श्री यशपाल के उपन्यास 'झूठा सच' के मराठी अनुवाद 'खोटा सत्य' के लिए **श्री सूर्यनारायण रणसुभे**, श्रीमती विद्याबिंदु सिंह के हिन्दी कविता संकलन के नेपाली अनुवाद 'केही कविताहरू' के लिए **श्री जीवन राणा**, श्री चंद्रप्रकाश सैकिया के असमिया उपन्यास 'महारथी' के ओड़िया अनुवाद के लिए **सुश्री ज्योत्स्ना राऊत बिस्वाल**, श्री के० सच्चिदानन्दन के मलयालम कविता संकलन के पंजाबी अनुवाद 'पीले पत्ते दा सुपना' के लिए **सुश्री वनिता**, श्री जोसेफ मेकवान के गुजराती उपन्यास 'आंगळियात' के राजस्थानी अनुवाद के लिए **श्री जेठमल मारू**, कबीर के कविता संकलन के सिंधी अनुवाद 'कबीर वचनावली' के लिए **सुश्री कमला गोकलानी**, श्री मलयटूर रामकृष्णन के मलयाळम उपन्यास 'यंतराम' के तमिल अनुवाद 'इयनतिरम' के लिए **श्री पा० आनंद कुमार**, डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम के अंग्रेजी निबन्ध 'इग्नाइटिड माइंड्स' के तेलुगु अनुवाद 'ना देशा युवजननुलारा' के लिए **श्री छिन्नवीर भद्रुडु**, श्री इफतेरवार गिलानी के अंग्रेजी संस्मरण 'माई डेज इन प्रिजन' के उर्दू अनुवाद 'तिहाड़ में मेरे शबोरोज' के लिए **श्री नुसरत जहीर** को पुरस्कृत किया जाएगा। पुरस्कार स्वरूप एक उत्कीर्ण ताम्रफलक और 20,000 का चेक अगस्त, 2009 में आयोजित एक विशेष समारोह में प्रदान किए जाएँगे।

'भानुप्रताप शुक्ल स्मृति राष्ट्रधर्म सम्मान' श्री हृदयनारायण दीक्षित सम्मानित

'राष्ट्रधर्म' अपने पूर्व सम्पादक (स्व०) भानुप्रताप शुक्ल की स्मृति में प्रतिवर्ष 'भानुप्रताप शुक्ल स्मृति राष्ट्रधर्म सम्मान' एक वरिष्ठ हिन्दी स्तम्भ लेखक और एक वरिष्ठ प्रादेशिक भाषा के स्तम्भ लेखक को प्रदान करता है। इस बार यह सम्मान हिन्दी के सुप्रसिद्ध विचारक, चिन्तक, लेखनी के धनी स्तम्भ लेखक **श्री हृदयनारायण दीक्षित** को तथा उड़िया के **श्री अरुण कुमार पण्डा** (भुवनेश्वर) को दिये जाने का सर्वसम्मत निर्णय निर्णायक-समिति द्वारा किया गया। श्री दीक्षित मात्र स्तम्भ-लेखक ही नहीं, वरन् एक विलक्षण शैलीकार भी हैं, जिनकी लेखनी की धार का पैनापन राष्ट्रहित से सम्बन्धित किसी भी विषय पर वस्तुपरक सप्रमाण विश्लेषण करने का अपूर्व सामर्थ्य रखता है। सम्मान राशि रु० 21,000/- (प्रत्येक) है।

बुकर इंटरनेशनल की सूची में नॉयपाल और महाश्वेता

लंदन। विख्यात बंगाली लेखिका महाश्वेता देवी और भारतीय मूल के विश्वप्रसिद्ध साहित्यकार वीएस नॉयपाल का नाम 2009 के मैन बुकर इंटरनेशनल प्राइज की उस सूची में शामिल किया गया है जिन्हें साहित्य में बेहतरीन योगदान के लिए लाइफटाइम अवार्ड से नवाजा जा सकता है। 60,000 पाउंड की रकम के साथ मिलने वाले इस पुरस्कार की सूची में कुल 14 लोगों के नाम हैं। मैन बुकर इंटरनेशनल प्राइज और एनुअल मैन बुकर प्राइज में थोड़ा फर्क है। मैन बुकर प्राइज के लिए किसी लेखक को उनकी किसी एक सर्वश्रेष्ठ रचना के आधार पर चुना जाता है जबकि बुकर इंटरनेशनल में साहित्यकार के जीवन भर के योगदान का मूल्यांकन किया जाता है। दोनों ही प्राइज अपने आप में बेहतरीन रचना और योगदान के लिए पहचाने जाते हैं।

तीन युवा रचनाकारों को नवलेखन पुरस्कार

18 मार्च को भारतीय ज्ञानपीठ के **नवलेखन पुरस्कार** से तीन युवा रचनाकारों को सम्मानित किया गया और युवाओं की 10 पुस्तकों का वरिष्ठ

साहित्यकारों के हाथों विमोचन हुआ। **श्री रविकांत** (कविता-संग्रह 'यात्रा'), **श्री विमल चंद्र पांडे** (कहानी संग्रह 'डर') और **श्री उमाशंकर चौधरी** (कविता संग्रह 'कहते हैं तब शहंशाह सो रहे थे') को पुरस्कृत किया गया। वरिष्ठ कवि श्री कुँवर नारायण की अध्यक्षता में दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित ने युवा लेखकों को पुरस्कार प्रदान कर उनकी पुस्तकों का विमोचन किया।

शेपा को शिक्षा भारती पुरस्कार

वाराणसी। ऑल इण्डिया एचीवर्स फाउंडेशन (दिल्ली) की ओर से 'सोसाइटी फॉर हायर एजुकेशन एण्ड प्रैक्टिकल एप्लिकेशन' (शेपा) तथा इसके डाइरेक्टर **प्रो० के०पी० पाण्डेय** को शिक्षा भारती पुरस्कार से अलंकृत किया गया है। यह पुरस्कार छह मार्च को ऑल इण्डिया फाउंडेशन एवं इडरा की ओर से आयोजित हैबिटेट सेंटर (नई दिल्ली) में शेपा के निर्देशक प्रो० पाण्डेय को सचिव प्रवीन रूँगटा के सान्निध्य में दिया गया। 'शेपा' की ओर से एप्लिकेशन ओरियेंटेड पाठ्यक्रमों को अपेक्षित उत्कृष्टता व गुणवत्ता के मानकों पर संचालित करने के उपलक्ष्य में यह पुरस्कार मिला है।

भारतीय मूल की लेखिका को बीबीसी पुरस्कार

लंदन। कोलकाता में जन्मी 47 वर्षीय भारतीय मूल की बाल साहित्यकार **अनीता गनेरी** को उनकी किताब 'प्लेनेट इन पेरिल' के लिए प्रतिष्ठित पीटर बुक पुरस्कार के लिए चुना गया है। यह किताब पृथ्वी के समक्ष संकट के विषय पर लिखी गई है जो बेस्ट सेलर हौरिबल ज्योग्राफी की सीरीज का हिस्सा है और यह धरती को ग्लोबल वार्मिंग से बचाने के लिए किशोरों को प्रेरित करती है। ब्ल्यू पीटर पुरस्कार प्रतिवर्ष बीबीसी टेलीविजन कार्यक्रम ब्ल्यू पीटर द्वारा बाल साहित्य में लेखन की कई श्रेणी में दिया जाता है।

देवीशंकर अवस्थी पुरस्कार

आलोचना के क्षेत्र में योगदान के लिए **प्रणय कृष्ण** को 5 अप्रैल को रवीन्द्र भवन नई दिल्ली के साहित्य अकादमी सभागार में 'देवीशंकर अवस्थी सम्मान' आयोजित समारोह में दिया जाएगा। इस अवसर पर साहित्य का दिक्काल विषय पर विचार-गोष्ठी होगी।

कमलेश्वर कहानी पुरस्कार समारोह

विगत दिनों अलीगढ़ में 'वर्तमान साहित्य' द्वारा श्री कमलेश्वर की पुण्य तिथि पर कमलेश्वर कथा पुरस्कार-2008 का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि थे सुप्रसिद्ध कथाकार श्री अब्दुल बिस्मिल्लाह। प्रतियोगिता में निर्णायक मंडल द्वारा **श्री कैलास चन्द्र** की कहानी 'अँधेरे में सुगंध' को चयनित किया गया। उर्दू के सुप्रसिद्ध कथाकार काजी अब्दुल सत्तार तथा वर्तमान साहित्य के सम्पादक श्री कुँवरपाल सिंह द्वारा पुरस्कार स्वरूप उन्हें 11 हजार रुपए की राशि, मानपत्र, स्मृति-चिह्न तथा शॉल भेंट किए गए।

हिन्दी की चिकित्सा पुस्तकों को पुरस्कार

भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद् ने हिन्दी में चिकित्सा विषयों पर लिखी पुस्तकों के लिए पुरस्कारों की घोषणा की है। वर्ष 2006-07 के लिए पहला पुरस्कार इंदौर के चेस्ट फिजीशियन **डॉ० राजेन्द्र मेहता** को उनकी कृति 'दमा एवं एलर्जी : कैसे छुटकारा पाएँ' के लिए पुरस्कार-स्वरूप 50 हजार रुपए दिए जाएँगे। दूसरा पुरस्कार मौलाना आजाद मेडिकल कॉलेज, नई दिल्ली के प्रोफेसर **पन्ना लाल** को उनकी पुस्तक 'सुखी बालिका' के लिए, तीसरा पुरस्कार छत्रपति साहूजी महाराज मेडिकल यूनिवर्सिटी, लखनऊ के प्रोफेसर **दिवाकर डालेला** तथा **डॉ० दीपक सीनेत** को दिया जाएगा।

डॉ० प्रेम जनमेजय को 'व्यंग्यश्री सम्मान'

पं० गोपाल प्रसाद व्यास की स्मृति में मनाए जाने वाले 'व्यंग्य विनोद' दिवस के अवसर पर नई दिल्ली के हिन्दी भवन में आयोजित समारोह में हिन्दी के प्रसिद्ध व्यंग्यकार **डॉ० प्रेम जनमेजय** को व्यंग्यश्री पुरस्कार वरिष्ठ न्यासी श्री रामनिवास लखोटिया ने प्रदान किया। अध्यक्षता वरिष्ठ आलोचक डॉ० निर्मला जैन ने की। समारोह में उपस्थित प्रमुख लोगों में व्यंग्यकार श्री ज्ञान चतुर्वेदी, हिन्दी भवन के अध्यक्ष श्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी, मंत्री डॉ० गोविंद व्यास शामिल थे। इस अवसर पर पण्डित गोपाल प्रसाद व्यास की पुत्री डॉ० रत्नावली कौशिक के निर्देशन में श्री व्यास पर बनी वेबसाइट 'गोपालप्रसाद व्यास डॉट कॉम' का लोकार्पण श्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी ने किया। सुप्रसिद्ध व्यंग्यकार श्री श्रीलाल शुक्ल पर केन्द्रित 'व्यंग्य यात्रा' के विशेषांक का लोकार्पण भी किया गया।

'मोहन राकेश सम्मान'

साहित्य कला परिषद्, दिल्ली द्वारा आयोजित 'मोहन राकेश अर्पण एवं नाट्य समारोह' में जनवादी नाटककार **राजेश कुमार** को मौलिक, पूर्णकालिक नाट्य-लेखन प्रतियोगिता में 'कह रैदास खलास चमारा' के सर्वश्रेष्ठ चयन के लिए 2008 का 'मोहन राकेश सम्मान' दिया गया।

डॉ० गर्ग को बालसाहित्य पुरस्कार

हिन्दी-सभा, सीतापुर द्वारा 65वें अधिवेशन में बालसाहित्य के क्षेत्र में सर्जन, शोध निर्देशन, सम्पादन एवं बालसाहित्य के विविध आयोजनों द्वारा हिन्दी बालसाहित्य के क्षेत्र में विगत तीन दशकों से किए जा रहे महत्त्वपूर्ण कार्यों के लिए 'बालवाटिका' के सम्पादक एवं वरिष्ठ बाल साहित्यकार **डॉ० भैरूँलाल गर्ग** को पुरस्कृत किया गया। मंचस्थ अतिथियों ने डॉ० गर्ग को माल्यार्पणकर, शॉल ओढ़ाकर, श्रीफल, प्रशस्ति-पत्र, स्मृतिचिह्न के साथ दो हजार एक सौ रुपए की नकद राशि भेंटकर पुरस्कृत किया।

सुदर्शन वशिष्ठ को कविता पुरस्कार

सुदर्शन वशिष्ठ के काव्य संकलन 'जो देख रहा हूँ' को हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी द्वारा वर्ष 2007 के अकादमी पुरस्कार के लिए चुना गया है। इस आशय की घोषणा सचिव, संस्कृति विभाग, हिमाचल सरकार श्री बी०के० अग्रवाल द्वारा शिमला में की गई।

कमल किशोर गोयनका को 'नागरी-रत्न सम्मान'

वाराणसी। विगत दिनों नागरी प्रचारिणी सभा ने प्रेमचंद-साहित्य के प्रसिद्ध विद्वान् **डॉ० कमलकिशोर गोयनका** को हिन्दी भाषा एवं साहित्य के क्षेत्र में किए उत्कृष्ट अवदान के लिए 'नागरी-रत्न सम्मान' से सम्मानित किया।

गोविन्द पाल को 'राष्ट्रीय बाल-साहित्य सम्मान'

विगत दिनों भोपाल में बाल साहित्यकार **श्री गोविन्द पाल** को बाल-साहित्य पर उल्लेखनीय कार्य हेतु बाल कल्याण एवं बाल-साहित्य शोध केन्द्र द्वारा 'राष्ट्रीय बाल-साहित्य सम्मान' के रूप में उन्हें 'राम सेवक सक्सेना स्मृति बाल-साहित्य सम्मान' से सम्मानित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि म०प्र० के संस्कृति एवं जनसम्पर्क मंत्री श्री लक्ष्मीकान्त शर्मा ने श्री गोविन्द पाल को सम्मान-पत्र, प्रतीक चिह्न, श्रीफल तथा सम्मान राशि के साथ शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया। समारोह में सर्वश्री विनोद चंद्र पाण्डेय 'विनोद', प्रेम भारती, बटुक चतुर्वेदी, शकुन्तला कालरा, घमंडीलाल अग्रवाल, विनय कुमार मालवीय, राजकुमार जैन 'राजन' आदि बाल-साहित्यकारों का सम्मान किया गया। इस अवसर पर प्रसिद्ध बाल पत्रिका 'बाल वाटिका' को 'श्रेष्ठ बाल पत्रिका' का सम्मान मिला।

नब्बे साहित्यकार व पत्रकार सम्मानित

विगत दिनों बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् ने साहित्य व पत्रकारिता में विशेष योगदान के लिए एक साथ नब्बे साहित्यकार व पत्रकारों को सम्मानित किया। वरीय पत्रकार व कवि **श्री मंगलेश डबराल** को वर्ष 2006-07 के लिए तथा 'दैनिक हिन्दुस्तान' के विशेष संवाददाता **श्री श्रीकांत** को वर्ष 2007-08 के लिए 'राजेन्द्र माथुर पत्रकारिता पुरस्कार' से सम्मानित किया। इसके साथ ही साहित्य साधना सम्मान, वयोवृद्ध साहित्यकार सम्मान, साहित्य सेवा सम्मान, लोकभाषा साहित्य पुरस्कार, नवोदित साहित्य पुरस्कार भी दिए गए। पुरस्कार पानेवालों में हिन्दी अकादमी, दिल्ली के सचिव **डॉ० ज्योतिष जोशी,**

डॉ० गंगेश गुंजन, नेशनल बुक ट्रस्ट के हिन्दी सम्पादक **डॉ० कमाल अहमद, श्री संजय कुमार, श्री राजकुमार प्रेमी** आदि प्रमुख हैं।

कवि करुण को 'भवानीप्रसाद मिश्र पुरस्कार'

विगत दिनों भोपाल के शहीद भवन में आयोजित अलंकरण समारोह में वरिष्ठ कवि **श्री बलवीर सिंह 'करुण'** को म०प्र० अकादमी ने उनके महाकाव्य 'मैं द्रोणाचार्य बोलता हूँ' पर 'पं० भवानीप्रसाद मिश्र पुरस्कार' से अलंकृत किया। 25 हजार रुपये की राशि का चेक, देवी अदिति की प्रतिमा, कृति सम्मान-पत्र और शॉल कर्नाटक के पूर्व राज्यपाल श्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी तथा म०प्र० के संस्कृति मंत्री श्री लक्ष्मीकांत शर्मा ने प्रदान किया।

मुजतबा हुसैन को 'अमीर खुसरो पुरस्कार'

15 मार्च को अंजुमन तरक्की-ए-उर्दू की ओर से आयोजित सम्मान समारोह में राष्ट्रीय उर्दू भाषा विकास परिषद् के पूर्व निदेशक डॉ० अली जावेद ने प्रख्यात उर्दू लेखक **पद्मश्री मुजतबा हुसैन** को उर्दू साहित्य में उत्कृष्ट योगदान के लिए 'अमीर खुसरो पुरस्कार' से सम्मानित किया।

मंजरी दुबे को 'शीला सिद्धान्तकर स्मृति पुरस्कार'

वर्ष 2009 को 'शीला सिद्धांतकर स्मृति पुरस्कार' **श्रीमती मंजरी दुबे** को उनके कविता संग्रह 'घर के मुँह में घुलता बताशा' के लिए दिया जाएगा। यह पुरस्कार स्त्री विषयक कविता-कृति पर 40 वर्ष तक के किसी युवा कवि को दिया जाता है।

साहित्यकार सम्मान समारोह आयोजित

इलाहाबाद की हिन्दुस्तानी एकेडमी द्वारा आयोजित सम्मान समारोह के मुख्य अतिथि थे उत्तर प्रदेश के उच्च शिक्षा मंत्री डॉ० राकेशधर त्रिपाठी। समारोह में एकेडमी की ओर से हिन्दी, संस्कृत एवं उर्दू के दस लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों सर्वश्री **चंडिका प्रसाद शुक्ल**, मोहन अवस्थी, मृदुला त्रिपाठी, विभुराम मिश्र, किशोर लाल, कविता वाचक्नवी, दूधनाथ सिंह, राजलक्ष्मी वर्मा, अली अहमद फातमी और एम०ए० कादिर को सम्मानित किया गया।

श्रीनाथद्वारा पाटोत्सव ब्रजभाषा समारोह

साहित्य मण्डल, श्रीनाथद्वारा का वार्षिक द्विदिवसीय पाटोत्सव ब्रजभाषा समारोह अपनी गौरवशाली परम्परा के अनुसार आयोजित किया गया। कार्यक्रम में साहित्य-मनीषियों, पत्रकारों, सामाजिक-व्यक्तियों को क्रमशः 'साहित्य-वाचस्पति', 'ब्रजभाषा-विभूषण', 'सम्पादक रत्न', 'श्रीनाथद्वारा रत्न' उपाधियाँ प्रदान करके सम्मानित किया गया।

पाठकों के पत्र

आपके द्वारा भेजी गयी 'भारतीय वाङ्मय' पत्रिका प्राप्त हुई। धन्यवाद! यह जानकर बहुत संतोष हुआ कि विश्वविद्यालय प्रकाशन स्तरीय, महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों को प्रकाशित कर रहा है और भारतीय वाङ्मय पत्रिका में नव-प्रकाशित ग्रन्थों की (अन्य प्रकाशकों की भी) समीक्षाएँ निष्पाक्षिक रूप से की जा रही हैं तथा कभी-कभी प्रसिद्ध मनीषियों/साहित्यकारों की संक्षिप्त जीवनियाँ भी प्रकाशित की जा रही हैं। डॉ० रामचन्द्र तिवारी का जीवन-वृत्तान्त फरवरी 'भारतीय वाङ्मय' में प्रकाशित किया गया जिससे एक कर्मठ साहित्य-सेवी का परिचय पाठकों को मिल सका। उनके निधन पर शतशः संवेदनाएँ।

—जी०आर०के० रेड्डी 'अमरजी'
स्वतन्त्र पत्रकार व लेखक, आन्ध्र प्रदेश

'भारतीय वाङ्मय' 2009 अंक मिला। धन्यवाद। 'भारतीय वाङ्मय' एक उपयोगी एवं ज्ञानवर्द्धक पत्रिका है। इसकी सम्पादन कला मुग्ध कर देती है। देश-विदेश के समाचारों के ज्ञान का बढ़ना सभाविक ही है। मुख पृष्ठ पर प्रकाशित कविता पुस्तक माहात्म्य और हिन्दी के प्रति भी कम ध्यानाकर्षी नहीं है। **—डॉ० स्वर्ण किरण**

'भारतीय वाङ्मय' का मार्च-2009 अंक प्राप्त हुआ। गाँधीजी के विचार पहले भी मेरे मन को छू जाते थे अब भी प्रभावित किया। 'भारतीय वाङ्मय' का प्रकाशन बनाये रखिये। यह प्रकाशन सूचना पत्रिका ही नहीं हिन्दी प्रगति की भी सूचक है। **—धर्मेन्द्र गुप्त,** *सम्पादक*, 'विषयवस्तु'

आपकी पत्रिका 'भारतीय वाङ्मय', फरवरी 2009 अंक मिला। सारगर्भित रचनाओं को प्रमुखता दी गई है तथा रचनाओं में रोचकता का भी तत्त्व विद्यमान है। निःसंदेह हिन्दी के प्रचार-प्रसार में आपकी पत्रिका का योगदान सराहनीय है। सम्पूर्ण प्रकाशन में भरपूर मेहनत की गई है।

—चन्द्रकान्त त्रिपाठी, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा

'भारतीय वाङ्मय' का मार्च 2009 का अंक समयान्तर्गत प्राप्त हुआ। पुस्तक महात्म्य निरन्तर पाठकों को पाठकीय स्पंदन के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित कर रहा है। प्रासंगिक-प्रार्थना वास्तव में समसामयिक स्थिति और परिस्थिति में जन-मानस के लिए एक टॉनिक है, रामबाण है, संजीवनी है। वैचारिक क्रांति को जागृत करने के लिए इसी प्रकार के आलेख की सम्प्रति साहित्यिक समाज को आवश्यकता है। हिन्दी साहित्य में आत्मा, हिन्दी और हिन्दी के छात्र, हिन्दी में वैश्विक सम्भावनाएँ—आलेख हिन्दी भाषा और साहित्य के प्रसार-प्रचार में काम्य सिद्ध हैं। सम्मान-पुरस्कार की सूचनाएँ मात्र सूचनाएँ नहीं अपितु सद्-साहित्य लेखन, हिन्दी भाषा-साहित्य प्रेम एवं सेवाधर्म की परिचायिकाएँ भी हैं तथा हिन्दी लेखन को प्रेरित करने, प्रोत्साहित करने तथा हिन्दी साहित्यकारों को साहित्यिक सेवाधर्म निर्वहन करने के जीवंत दस्तावेज हैं। 'पाठकों के पत्र' मात्र साहित्यिक पत्र नहीं बल्कि समीक्षात्मक-तटस्थतावादी सम्यक् एवं संतुलित मूल्यांकन और पठन-पाठन के साक्ष्य के प्रस्तुतीकरण हैं जिनसे पत्रिका के पाठकों की संख्या बल, साहित्यिक गतिविधियाँ तथा दशा और दिशा का अंदाज लगाया जा सकता है। पुस्तक समीक्षा ने आलोचना विधा का प्रतिनिधित्व किया है। पत्रिका अपने लक्ष्य प्राप्ति हेतु सतत प्रयत्नशील एवं क्रियाशील है जिसका प्रत्येक अंक संग्रहणीय एवं पठनीय होता है।

—डॉ० पशुपतिनाथ उपाध्याय, अलीगढ़

प्रथम पृष्ठ पर पुस्तक महात्म्य एवं हिन्दी के प्रति भावना, कविताएँ, वास्तविकता का दिग्दर्शन कराकर प्रेरणा देती हैं। प्रासंगिक प्रार्थना भी आधुनिक स्थिति को कुशलता से सामने रखकर देश जागृत करने हेतु प्रेरणा देती है। हिन्दी साहित्य में आत्मा आलेख गम्भीरता से साहित्य जगत के महारथियों की साहित्यिक यात्रा के सम्बन्ध में सोचने, समझने का बोध कराता है।

—मदनमोहन वर्मा, ग्वालियर

लंदन पुस्तक मेले में भारतीय भाषा-साहित्य

लंदन में इस वर्ष 20-22 अप्रैल 09 तक आयोजित होने जा रहा 'लंदन-बुक-फेयर' भारतीय-लेखन पर केन्द्रित होगा। इस मेले में भारत की छवि एक उभरते बाज़ार और साहित्य-संकुल के रूप में प्रस्तुत की जानी है। इसीलिए लंदन के इस पुस्तक मेले में भारत के सिर्फ इंग्लिश-लखन को ही नहीं, बल्कि भारत के भिन्न-भिन्न भाषांचलों की सांस्कृतिक विशिष्टता की प्रस्तुति के लिये 16 भाषाओं की साहित्य-कृतियाँ भी शामिल की जायेंगी। इस क्रम में लेखन-प्रक्रिया से सम्बद्ध पाँच साहित्य-सत्र भी आयोजित किये जायेंगे। 20 से 22 अप्रैल के बीच लंदन-पुस्तक मेले के माध्यम से भारतीय भाषाओं के लेखक, प्रकाशक और विक्रेता विश्व-बाज़ार के सम्पर्क में आयेंगे। इस मेले में लगभग 50 भारतीय लेखक, इतने ही प्रकाशक और स्टॉक होल्डर्स हिस्सा लेंगे। इस मेले के जरिये भारतीय लेखकों को नये पाठकों के साथ-साथ नये अवसर भी मिलेंगे। एक भारतीय लेखक की कृति किसी दूसरे देश के प्रकाशक द्वारा विपणित की जा सकेगी और भारतीय प्रकाशक विश्व बाज़ार में भारतीय लेखकों की रचनाओं का निर्यात कर सकेंगे। इस मेले में 67 देशों के प्रकाशक, विक्रेता, उद्योग-जगत के प्रतिनिधि 117 काउंटरों के माध्यम से भारतीय-भाषा-साहित्य के इस वैश्वक-विनिमय का संचालन करेंगे।

पुस्तक परिचय

बौद्ध कापालिक साधना और साहित्य

डॉ० नागेन्द्रनाथ उपाध्याय

प्रथम संस्करण : 2009 ई०

पृष्ठ : 288

सजिल्द : रु० 300.00

ISBN: 978-81-7124-684-7

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

हिन्दी के आदिकालीन साहित्य और भक्तिकालीन साहित्य की भूमिका प्रस्तुत करनेवाली बौद्ध सिद्धों की अपभ्रंश रचनाओं का अध्ययन केवल हिन्दी ही नहीं सम्पूर्ण समकालीन साहित्य, किंबहुना तत्कालीन समग्र धर्मदार्शनिक एवं साधनात्मक जीवन के अध्ययन के लिए उपयोगी है; क्योंकि तंत्रदर्शन एवं साधना का अति व्यापक एवं गंभीर प्रभाव सर्वत्र दिखाई पड़ता है। इसी दृष्टि से बहुत पहले १९५८ में तांत्रिक बौद्ध साधना और साहित्य की रचना की गई थी।

यह ग्रन्थ उस अध्ययन के एक पक्ष का विस्तार है। बहुत पहले आचार्य डॉ० हजारीप्रसाद जी द्विवेदी ने अपने ग्रंथ 'नाथ सम्प्रदाय' में जालंधर पाद और कान्हुपा के कापालिक साधन और 'बामारग' की चर्चा नाथ सम्प्रदाय के परिप्रेक्ष्य में ही की थी। दूसरे उस समय बौद्धों के कापालिक साधन और दर्शन से सम्बन्धित किसी शास्त्रीय ग्रन्थ की सहायता नहीं ली गई थी। अत: बौद्धों के कापालिक तत्त्वों, साधनों, दार्शनिक सिद्धान्तों की मीमांसा भी नहीं हो पाई। यहाँ तक कि श्री स्नेलग्रोव ने हेवज्रतंत्र और उसकी टीका हेवज्रपंजिका का संपादन करके भी उसके कापालिक तत्त्वों का विस्तृत विवेचन नहीं किया और न एक पृथक् बौद्ध साधनाधारा के रूप में इसे प्रस्तुत ही किया। यह ग्रंथ बौद्ध साधना और साहित्य के अनेक अछूते, विस्मृत, तिरस्कृत और महत्त्वपूर्ण सूत्रों को एकत्रित कर उनका व्यवस्थापन करते हुए बौद्धों के कापालिकतत्त्व का स्वरूप प्रस्तुत करता है। सामान्यतया केवल शैवों में ही कापालिकों की स्थिति माननेवालों को इस ग्रंथ से नया प्रकाश, नई सूचनाएँ एवं भारतीय कापालिक साधना का एक नया स्वरूप देखने को मिलेगा। कापालिक साधना के विषय में फैली अनेक भ्रांतियों का निराकरण भी होगा, इसमें संदेह नहीं। यह ग्रन्थ बौद्ध काल की तांत्रिक क्रियाओं और बौद्ध साहित्य से पाठकों का सम्यक परिचय कराता है।

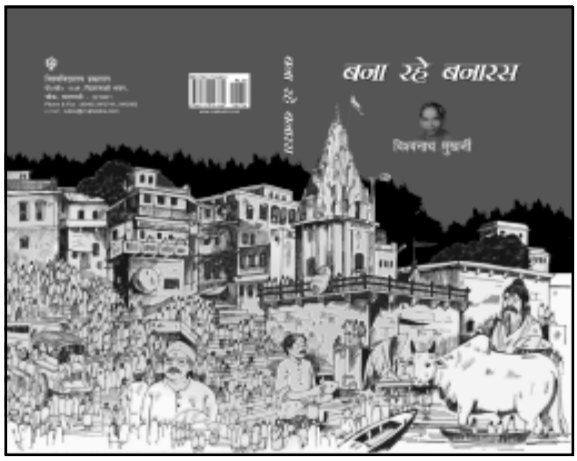

बना रहे बनारस

विश्वनाथ मुखर्जी

तृतीय संस्करण : 2009 ई०

प्रकाशक

विश्वविद्यालय प्रकाशन

पो०बॉ० 1149, विशालाक्षी भवन, चौक, वाराणसी

पृष्ठ : 124 अजिल्द : रु० 50.00 ISBN : 978-81-7124-683-0

मैंने कहा (प्रथम संस्करण)

खुदा को हाजिर-नाजिर जानकर मैं इस बात को क़बूल करता हूँ कि बनारस को मैंने जितना जाना-समझा है, उसका सही-सही चित्रण पूरी ईमानदारी से किया है। प्रस्तुत पुस्तक जिस शैली में लिखी गयी है, आप स्वयं ही देखेंगे। जहाँ तक मेरा विश्वास है, किसी नगर के बारे में इस प्रकार की व्यंग्यात्मक शैली में वास्तविक परिचय देने का यह प्रथम प्रयास है। इस संग्रह के कुछ लेख जब प्रकाशित हुए तब उनकी चर्चा वह रंग लायी कि लेखक सिर्फ हल्दी-चूने के सेवन से वंचित रह गया। दूसरी ओर प्रशंसा के इतने पत्र प्राप्त हुए कि अगर समझ ने साथ दिया होता तो उन्हें रद्दी में बेचकर कम से कम रियायती दर वाला सिनेमा शो तो देखा ही जा सकता था।

इन लेखों में कहीं-कहीं जनश्रुतियों का सहारा मजबूरन लेना पड़ा है। प्रार्थना है कि 'श्रुतियों' और 'स्मृतियों' को ऐतिहासिक सत्य न समझा जाय। हाँ, जहाँ सामाजिक और ऐतिहासिक प्रश्न आया है, वहाँ मैंने धर्मराज बनकर लिखने की कोशिश की है। पुस्तक में किसी विशेष व्यक्ति, संस्था या सम्प्रदाय को ठेस पहुँचाने का प्रयत्न नहीं किया गया है, बशर्ते आप उसमें जबरन यह बात न खोजें।

अन्त में इस बात का इकबाल करता हूँ कि मैंने जो कुछ लिखा है, होश-हवास में लिखा है, किसी के दबाव से नहीं। ये चन्द अल्फाज़ इसलिए लिख दिये कि मेरी यह सनद रहे और वक्त जरूरत पर आपके काम आये। बस फ़कत।

सिद्धगिरि बाग, वाराणसी — *बकलमखुद*

बुद्ध पूर्णिमा, 2015 वि० — **विश्वनाथ मुखर्जी**

दूसरा संस्करण

१९७० के बाद से यह पुस्तक अप्राप्य हो गयी। प्रकाशक या लेखक ने द्वितीय संस्करण के प्रति दिलचस्पी नहीं ली। लेकिन इससे पुस्तक की लोकप्रियता में कमी नहीं हुई। **निरन्तर माँग के कारण भाई पुरुषोत्तमदास मोदी के चिरंजीव श्री अनुराग इसे प्रकाशित कर रहे हैं।** जिनके पास फालतू धन्यवाद हो कृपया अनुरागजी को दें। कारण बनारस अब बहुत बदल गया है। आजादी के पूर्व की स्मृतियाँ नयी पीढ़ी के लिए अकल्पनीय हैं।

मकर संक्राति, 2051 वि० — **—विश्वनाथ मुखर्जी**

तृतीय संस्करण

स्वर्गीय विश्वनाथ मुखर्जी की कृति 'बना रहे बनारस' का तीसरा संस्करण प्रकाशित करने में हमे हर्ष हो रहा है और गर्व भी। यह इस बात का प्रतीक है ही कि पाठकों ने इस कृति को कितना सराहा है, पसन्द किया है या यह कितनी लोकप्रिय हुई है। इस बात का प्रतीक भी है कि लोग बनारस के बारे में बहुत कुछ जानना चाहते हैं। पाठकों की जिज्ञासा को परवान चढ़ाया है लेखक की रोचक शैली ने। बनारस के बारे में जानने के लिए इतना कुछ है कि इस पर सैकड़ों पुस्तकें लिखी गई हैं और लिखी जा रही हैं। हमने भी इस दिशा में कई सार्थक प्रयास किए हैं। बनारस को जितने कोणों से देखिए, एक नई तस्वीर उभरती है। लेखक ने कई रोचक पहलुओं को इस पुस्तक में समेटा है। **बनारस अपने घाटों के बारे में विश्व में विख्यात तो है ही, यहाँ की गायिकाओं ने भी संगीत और नृत्य कला में देश की इस सांस्कृतिक राजधानी का परचम लहराया है। हम इस प्राचीनतम नगर की इन दोनों विशेषताओं को इस नये संस्करण में समाहित कर रहे हैं।** विश्वास है कि पाठक इन्हें पसंद करेंगे और शीघ्र ही हमें चौथे संस्करण के लिए प्रेरित करेंगे। — **अनुराग मोदी**

भोजपुरी और हिन्दी

(भोजपुरी व्याकरण की पहली पुस्तक)

डॉ० शुकदेव सिंह

प्रथम संस्करण : 2009 ई०

पृष्ठ : 292

सजि. : रु० 275.00 ISBN : 978-81-7124-671-7

अजि. : रु० 175.00 ISBN : 978-81-7124-672-4

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

भोजपुरी का सीधा सम्बन्ध लोक जीवन से है। पूर्वी उत्तर प्रदेश और पश्चिमी बिहार या उससे आगे के विस्तृत क्षेत्र में रहने वाले लोगों के जीवन में भोजपुरी रची-बसी है। शब्दों, लोकोक्तियों और मुहावरों के मामले में हिन्दी से भी ज्यादा समृद्ध है भोजपुरी। इसी से बोलचाल के देशज शब्दों को लेकर हिन्दी ने अपना खजाना भरा है और भरती जा रही है। हाँ, कुछ लेखक अवश्य ऐसे हैं जो अंग्रेजी के शब्दों का तो धड़ल्ले से प्रयोग करते हैं लेकिन देशज शब्दों से परहेज करते हैं। भोजपुरी के कुछ शब्द और कुछ लोकोक्तियाँ ऐसे सटीक अर्थ देती हैं, जो किसी भाषा में नसीब न हो। लेकिन चिन्ता की बात यह है कि विकास और शहरीकरण के कारण भोजपुरी की शब्द-सम्पदा धीरे-धीरे क्षीण होती जा रही है। नयी पीढ़ी के युवक तो गिटपिटिया अंग्रेजी में बोलने में गर्व महसूस करते हैं। उन्हें भोजपुरी बोलने में हीनता महसूस होती है जबकि उनका जन्म भोजपुरी धरती और परिवेश में हुआ रहता है।

हिन्दी के प्रकाण्ड विद्वान डॉ० शुकदेव सिंह ने भोजपुरी के उन शब्दों, लोकोक्तियों और मुहावरों को सहेजने का प्रयास इस पुस्तक में किया है जो या तो विलुप्त हो गए हैं या विलुप्त होने की कगार पर खड़े हैं। लोक जीवन ने रोजमर्रा की जिन्दगी में प्रयुक्त होने वाले ऐसे-ऐसे शब्द गढ़े हैं कि उनकी मेधा और क्षमता पर आश्चर्य होता है। इन शब्दों से हिन्दी को व्यापक समृद्धि मिल सकती है। यह पुस्तक इसी दिशा में किया गया एक सार्थक और कारगर प्रयास है जो निश्चित रूप से हिन्दी के अध्येताओं, रचनाकारों और लेखकों के लिए उपयोगी तो सिद्ध होगा ही, हमें अरबी, फारसी और अंग्रेजी भाषाओं की तरफ टकटकी लगाने की बजाय अपनी बोलियों को टटोलने की प्रेरणा भी देगा।

यह पुस्तक भोजपुरी भाषा का शास्त्रीय अध्ययन है। विद्वान लेखक डॉ० शुकदेव सिंह ने पहली बार भोजपुरी व्याकरण का विवेचन किया है। भोजपुरी की ध्वनियों, रूप-रचना, संज्ञा, कारक, विशेषण, संख्यावाचकों, सर्वनाम, क्रिया-शब्दों, अव्यय और इनके विभेदों का विस्तार से वर्णन इस पुस्तक में है। भोजपुरी भाषा के उद्भव का तो वर्णन है ही, उसकी बोलियों—मैथिली, मगही, वज्जिका, अंगिका आदि की भी भाषाशास्त्रीय व्याख्या की गई है। भोजपुरी भाषा की एक और बोली—'काशिका' (जो खासतौर पर बनारस और उसके आस-पास के इलाकों में बोली जाती है) और उसी के एक रूप—'बनारस के घाटों पर बोली जाने वाली घटही बोली' का भी भाषाशास्त्रीय विश्लेषण है।

भोजपुरी भाषा के मुहावरों और लोकोक्तियों के अलावा गाँव-घर की ठेठ बोलियों और व्रत, उपवास के समय लोकजीवन में प्रचलित किस्से और कहानियों के वर्णन के साथ कुछ देवी-गीतों का भी उल्लेख किया गया है।

ध्वनियों में स्वर, व्यंजन, ध्वनि परिवर्तन, रूप-रचना और विशेषण के विभिन्न रूपों का विस्तार से वर्णन किया गया है। संज्ञाओं का वर्णन करते हुए लेखक ने कहा है कि भोजपुरी की संज्ञाओं का अंत स्वर अथवा व्यंजन किसी रूप में होता है। यह भोजपुरी भाषा की अपनी विशेषता है। इसे स्वरान्त और व्यंजनान्त का उदाहरण देकर विस्तार से समझाया गया है। भोजपुरी भाषा में विभिन्न कारक चिह्नों का वर्णन भी विस्तृत रूप से किया गया है। भोजपुरी भाषा में विशेषणों के लिए जिन प्रत्ययों का प्रयोग होता है उनका भी सूक्ष्मता से उल्लेख किया गया है। संख्यावाचक शब्दों और सर्वनाम के भेदों का खोजपूर्ण विवरण उपलब्ध कराया गया है। मूल धातुओं के रूप में प्रचलित अनेक क्रिया-रूपों का वर्णन किया गया है जो मूल धातुओं के रूप में प्रचलित हैं।

इसी प्रकार भोजपुरी की बोली मैथिली मिथिला क्षेत्र में, मगही (मागधी) मगध क्षेत्र में, वज्जिका प्राचीन काल में विख्यात वृज्जि संघ के क्षेत्र में और अंगिका अंग देश (अब भागलपुर) और इसके आस-पास के क्षेत्रों में बोली जाती है। इसी प्रकार नेपाली भाषा (बोली) नेपाल की राजभाषा है और इसमें प्रचुर साहित्य लिखा जा रहा है। इस भाषा के अंगों-उपांगों का अध्ययन भारतीय विश्वविद्यालयों में किया जा रहा है।

भोजपुरी के मुहावरों और लोकोक्तियों के बिना तो हिन्दी भाषा अधूरी है ही। भोजपुरी भाषा की रचनाओं का अध्ययन-अध्यापन और उसके विभिन्न पक्षों पर शोधकार्य विश्वविद्यालयों में और स्नातकोत्तर कॉलेजों में तेजी से हो रहे हैं। ऐसी स्थिति में भोजपुरी के छात्रों और शोधार्थियों के लिए यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है।

यह किताब भोजपुरी 'पढ़त' का छोटा से छोटा नमूना भर है। मेरी सत्तर वर्ष की श्रुति, स्मृति, पढ़ाई, लिखाई अर्थात् ''कुछ शेष चिह्न हैं, मेरे उस महा मिलन के''।

—स्व. डॉ० शुकदेव सिंह

कृष्नायन

रामबदन राय

संशोधित एवं परिवर्धित द्वितीय संस्करण : 2009

पृष्ठ : 404

सजिल्द : रु० 300.00

ISBN: 978-81-7124-682-3

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

रामचरित मानस शैली पर आधारित है 'कृष्नायन'

'कृष्नायन' के रचयिता कवि रामबदन के अनुसार 'कृष्नायन' के सृजन का मुख्य उद्देश्य कृष्ण भक्त पाठकों को ऐसा ग्रन्थ उपलब्ध कराना था, जो श्रीरामचरित मानस की शैली में हो, जिसका वे मानव की तरह ही भक्ति भाव से मास पारायण, नवाह्न पारायण या सामूहिक रूप से एक बार में ही अखण्ड पाठ कर सकें, गा-बजाकर प्रभु श्रीकृष्ण के पावन चरित्र का आनन्द उठा सकें। इस कृति में कृष्ण से सन्दर्भित ऐसी सभी प्रमुख कथाओं का समावेश है, जो मानव जीवन के लिए अत्यन्त शुभ है, कल्याणकारी है।

''सात खण्डों में प्रकाशित इस संस्करण में सभी दोहों, चौपाइयों तथा विविध छंदों के भावार्थ तो पूर्व की भाँति दिये गये हैं, इसमें चार की जगह 8 रंगीन एवं 38 श्वेत श्याम चित्र हैं। चार नई रोचक कथाएँ हैं। माँ सरस्वती के धरती पर अवतरण तथा शिक्षार्थी कृष्ण द्वारा समारोहपूर्वक उनके पूजन की कथा, फिर गुरु संदीपनि द्वारा दिये गये वे उपदेश, जो कालान्तर में गीता के रूप में श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिये गये हैं इस संस्करण की महत्त्वपूर्ण विशेषता हैं।''

रामबदन कृत 'कृष्नायन'

बिरची बहुतों ने रामायन
सिरजी कितनों ने कृष्णायन
किन्तु रची जो 'राम बदन' ने
सबसे अलग मधुर मनसायन
विधि पारायण, सात खण्ड हैं
पग-पग ब्रज आनंद कंद हैं
मात्र नहीं दोहा-चौपाई
एक-एक बढ़ि सरस छंद हैं
सुठि सादे रंगीन चित्र हैं
घचकू सरिस हँसोड़ मित्र हैं
न्यूनाधिक रस विविध सगुंफिल
गंधित चारु चरित्र इत्र हैं
अर्थ सहित हर कृष्ण कथाएं
यत्र-तत्र ऋतु-पर्व छँटाएं
बतलाएं किस-किसको कितना
ले खुद पढ़ें, अपर पढ़वाएं

सामान्य पाठकों, छात्रों, अध्येताओं, शोधार्थियों, पुस्तकालयों, शिक्षा संस्थाओं, स्कूल-कॉलेज, विश्वविद्यालय, सार्वजनिक पुस्तकालयों एवं सरकारी/ गैर सरकारी संस्थाओं आदि के सम्पूर्ण पुस्तकीय समाधान हेतु

वाराणसी में तीन हजार वर्ग फुट में स्थापित विशाल शोरूम तथा इंटरनेट की वैश्विक दुनिया में स्थापित विशाल वर्चुअल शोरूम

http://www. vvpbooks.com

साहित्यिक तथा विभिन्न विषयों की हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत पुस्तकों का विशाल संग्रह

अनेकानेक विषयों के साथ आपकी सेवा में सदैव तत्पर

साहित्य, भाषा-विज्ञान, उपन्यास, कथा-कहानी, कविता, नाटक, आलोचना, समीक्षा, संस्मरण, जीवनी, आत्मकथा, यात्रा वृत्तांत आदि। अध्यात्म, योग, तंत्र-मंत्र, ज्योतिष, मनीषी-संत-महात्मा जीवनचरित, धर्म एवं दर्शन, भारत विद्या, इतिहास, कला एवं संस्कृति, पुरातत्त्व, अभिलेख, मुद्राएँ, संग्रहालय विज्ञान, वास्तु कला, जनसंचार, पत्रकारिता, संगीत, अर्थशास्त्र, वाणिज्य, प्रबन्धशास्त्र, राजनीति विज्ञान, शिक्षाशास्त्र, समाज विज्ञान, स्त्री-विमर्श, मनोविज्ञान, भूगोल, भू-विज्ञान, विशुद्ध विज्ञान जैसे—फिजिक्स, केमिस्ट्री, जूलॉजी, बॉटनी, बायोलॉजी और कम्प्यूटर साइंस आदि। मानविकी, समाज विज्ञान और कुछ विशेष विषयों के अन्तर्गत लगभग सभी विषयों की महत्त्वपूर्ण पुस्तकों की उपलब्धता सुनिश्चित कर सम्पूर्ण पुस्तकीय समाधान की ओर सतत प्रयासरत।

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

विशालाक्षी भवन, चौक (चौक पुलिस स्टेशन परिसर के पार्श्व में)

वाराणसी-221001 (उ०प्र०)

Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082 ● E-mail : vvp@vsnl.com & sales@vvpbooks.com ● Website : www.vvpbooks.com

पुस्तकें प्राप्त करने हेतु सुविधानुसार पधारें, लिखें, फोन/फैक्स करें, ई-मेल करें अथवा वेबसाइट का अवलोकन कर ऑनलाइन पुस्तकों का आदेश करें।

संगोष्ठी/लोकार्पण

'युगों-युगों की वाराणसी, निरंतरता, परिवर्तन एवं वैश्वीकरण' विषयक संगोष्ठी सम्पन्न

वाराणसी। हिन्दी साहित्य के प्रख्यात आलोचक प्रो० नामवर सिंह बनारस को समझने की बजाय महसूस करने पर बल देते हैं। कहते हैं कि, बिना महसूस किए बनारस को समझना सम्भव नहीं है। बनारस की इकहरी तस्वीर बनाना अधूरा चित्रांकन होगा। इस प्राचीन शहर की विशालता है कि हमेशा यहाँ विरोधी ध्रुवों का सामंजस्य मिलता है। वैदिक व अवैदिक दोनों परम्पराओं का पोषण काशी में हुआ। प्रो० नामवर सिंह इतिहास विभाग और इंटेक की ओर से आयोजित दो दिवसीय सेमिनार के उद्घाटन पर बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि नाम के प्रयोग में सबसे पुरानी काशी है, फिर बनारस और अब वाराणसी। बनारस को समय के साथ अलग-अलग फ्रेम में रखकर देखने की जरूरत है। सच्चाई यह है कि यह अकेला अखिल भारतीय शहर है।

अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो० राय आनन्द कृष्ण ने कहा कि इतिहासकारों को चाहिए कि कला, पुरातत्त्व, साहित्य, संस्कृति, संस्कार आदि औजारों को लेकर हमारी संस्कृति अर्थात जीवन पद्धति के बारे में और जानें। सामाजिक विज्ञान संकाय प्रमुख प्रो० ए०के० जैन ने कहा कि जब तक काशी में वास नहीं करेंगे काशी को समझना सम्भव नहीं है। स्वागत विभागाध्यक्ष प्रो० आनन्द शंकर सिंह ने किया।

संगोष्ठी के अन्तिम दिन विद्वानों ने कहा, ''बनारस स्वयं में एक जीवित इतिहास है। यह इतिहास की धरोहर भी है और सांस्कृतिक विरासत भी। यह शहर हजारों सालों का रहस्य खुद में समेटे हुए है। इतिहास के विशेषज्ञ हों, साहित्य के विद्वान, कला के मर्मज्ञ या फिर भाषाओं के जानकार, सभी के लिए काशी महत्त्वपूर्ण है।''

प्रसिद्ध इतिहासकार व पूर्व सूचना आयुक्त ओ.पी. केजरीवाल ने कहा कि बनारस ही एक ऐसा शहर है जिसने मृत्यु के भय को जीत लिया है। लोग यहाँ मृत्यु प्राप्त करने के उद्देश्य से भी आते हैं। परम्पराओं, धर्म और विश्वास के संगम का नाम बनारस है। हमारी जो परम्पराएँ मर रही हैं उन्हें बचाए रखने की जरूरत है।

संगोष्ठी के विभिन्न सत्रों में गोरखपुर विश्वविद्यालय के पूर्व प्रतिकुलपति प्रो० के०पी० मिश्रा, प्रो० काशी नाथ सिंह, प्रो० जे०पी० मिश्रा, प्रो० एम०पी० सिंह, प्रो० रंगनाथ पाठक, डॉ० के० चन्द्रमौली, डॉ० मारुतिनंदन तिवारी आदि ने शोधपत्र व विचार प्रस्तुत किया।

वर्धा में 'हिन्दी समय' पर विमर्श आयोजन

देश के एकमात्र महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के नवनियुक्त तीसरे कुलपति सुप्रसिद्ध साहित्यकार, सम्पादक व कुशल प्रशासक विभूति नारायण राय ने वर्धा में पाँच दिवसीय 'हिन्दी समय' विमर्श के वृहद आयोजन द्वारा जिस 'विजन' को प्रस्तुत किया, वह भारतीय विश्वविद्यालयों में अन्यतम उदाहरण है। किसी भी भारतीय विश्वविद्यालय जगत में इतनी अधिक संख्या में पत्रकार, कवि, आलोचक, विचारक, कथाकार, मीडियाकर्मी, जनसंघर्षों से जुड़े सामाजिक कार्यकर्ताओं, नाट्यकर्मी, समाज-वैज्ञानिक आदि उपस्थित नहीं हुए थे, जितने कि 'हिन्दी समय' के पाँच दिवसीय वैचारिक विमर्श में।

कार्यक्रम का उद्घाटन विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ० नामवर सिंह ने किया। उन्होंने इस आयोजन को वैचारिक महाकुम्भ कहा, वहीं समापन सत्र में विश्वविद्यालय के संस्थापक कुलपति व सुप्रसिद्ध कवि अशोक वाजपेयी ने हिन्दी को वैचारिक व सांस्कृतिक भाषा बनाने का प्रयत्न करने पर बल दिया।

उद्घाटन सत्र में नामवर सिंह ने कहा कि हिन्दी आज के समय की जरूरत है। देश का भविष्य हिन्दी के साथ जुड़ा हुआ है और इस भाषा को विद्वानों की बजाय आम लोग ही मजबूत बनायेंगे। उन्होंने विश्वविद्यालय के सन्दर्भ में कहा कि नये कुलपति के नेतृत्व में इस विश्वविद्यालय का नया युग आरम्भ हुआ है। वर्धा भारत का नाभि क्षेत्र है और इस ऐतिहासिक शहर में स्थित विश्वविद्यालय को हिन्दी की विकास यात्रा को आगे ले जाने का कार्य करना है, साथ ही उन्होंने कहा कि केवल भारत ही नहीं, समूचा विश्व हिन्दी समाज इस विश्वविद्यालय में समाहित है और इस रूप से यह विश्वविद्यालय अन्तर्राष्ट्रीय है।

उद्घाटन सत्र के प्रारम्भ में कुलपति विभूतिनारायण राय ने अपने स्वागत भाषण में कार्यक्रम की परिकल्पना पर प्रकाश डालते हुए बताया कि बदलते समय में हिन्दी हमारी सबसे बड़ी जरूरत है। हमें हिन्दी को विश्वमंच पर लाना है। इसके लिए हिन्दी भाषा और हिन्दी समाज के अंतर्सम्बन्धों और उसमें हो रहे बदलावों को जानना, फिल्म, नाटक, पत्रकारिता तथा अन्य कला-अनुशासनों में हो रहे परिवर्तनों को समझना होगा।

समापन सत्र में महात्मा गाँधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति व सुप्रसिद्ध कवि अशोक वाजपेयी ने कहा कि हिन्दी और भारतीय भाषाओं को एक साथ संघर्ष करना होगा। हिन्दी प्रदेशों में हिन्दी विपन्न और विपन्नता की स्थिति में आ रही है। हिन्दी में भाषा का भूगोल बढ़ा है परन्तु अनुराग घटा है। एक जमाने में जयपुर, आगरा, बनारस जैसे शहरों को हिन्दी तथा संगीत एवं नृत्य के घरानों से जाना जाता था। परन्तु आज यह घराने वहाँ नहीं बचे हैं। परन्तु महाराष्ट्र और कर्नाटक जैसे राज्यों में इन घरानों की उपस्थिति दिखाई देती है। हिन्दी के भविष्य के विभिन्न पहलुओं को छूते हुए उन्होंने कहा कि हिन्दी को बचाए रखने के लिए हमें लीक से हटकर नयी पद्धतियाँ विकसित करने का दुस्साहस दिखाना ही होगा।

यह आयोजन एक प्रकार से साहित्य का महाकुंभ जैसा था, जिसमें पाँचों दिन अनेक सत्रों में देशभर के विभिन्न भागों से आए सैकड़ों रचनाकारों, आलोचकों, पत्रकारों, संस्कृति-कर्मियों, नाटककारों, फिल्मकारों तथा सामाजिक और राजनीतिक कार्यकर्ताओं ने सक्रिय भाग लिया।

विद्वतजनों ने महात्मा गाँधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के इस आयोजन को ऐतिहासिक बताते हुए इसे 'हिन्दी समग्र से साक्षात्कार' की उपाधि दी। उन्होंने कहा कि पाँच दिनों में विभिन्न 23 सत्रों में विद्वत्जनों द्वारा विमर्श करने का ऐसा प्रयास किसी विश्वविद्यालय में अब तक नहीं हुआ।

सहज बना लेने की ऊँचाई थी प्रो० त्रिभुवन में

वाराणसी। समालोचक व काशी विद्यापीठ के पूर्व कुलपति प्रो० त्रिभुवन सिंह की पुण्यतिथि की पूर्व संध्या पर 25 मार्च को सारनाथ स्थित केन्द्रीय उच्च तिब्बती विश्वविद्यालय में स्मृति सभा आयोजित की गई। इसमें जिले के साहित्यसेवियों ने प्रो० सिंह से जुड़े संस्मरण सुनाए। साथ ही उनके व्यक्तित्व व कृतित्व पर चर्चा की। प्रख्यात साहित्यकार मनु शर्मा ने कहा कि कठिन को सहज बना लेना प्रो० सिंह की ऊँचाई थी। वह कठोर से कठोर बात को सह लेते थे। वहीं उनमें असीम धैर्य भी था।

उन्होंने कहा कि इण्डिया टीवी के निदेशक डॉ० हेमंत शर्मा ने 'प्रो० त्रिभुवन सिंह स्मृति ट्रस्ट' के गठन की घोषणा की है। प्रो० सिंह के शिष्य डॉ० राधेश्याम जायसवाल व डॉ० तृप्ति रानी जायसवाल ने इस ट्रस्ट को पाँच हजार रुपये देने की घोषणा की। साहित्यकार प्रो० काशीनाथ सिंह ने बतौर मुख्य अतिथि कहा कि प्रो० त्रिभुवन सिंह के काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में आने के बाद गुरु-शिष्य के बीच की दूरी का माहौल खत्म हुआ। तिब्बती विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० नवांग समतेन ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि प्रो० सिंह में मानवता की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। उनमें लोगों को संगठित करने की अद्भुत शक्ति थी। वह एक अच्छे शिक्षक, विचारक व

समाजसेवी थे। डॉ० सुरेन्द्र प्रताप सिंह, डॉ० गया सिंह, डॉ० नीरजा माधव, डॉ० यूपी सिंह आदि ने भी विचार व्यक्त किए। संचालन डॉ० बाबूराम त्रिपाठी ने किया।

पत्रिकाएँ समय की नब्ज पर रखें अंगुली

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो० कुमार पंकज ने कहा कि पत्रिकाओं के लिए सबसे आवश्यक यह है कि वह अपने समय की रचनाशीलता की नब्ज पर अंगुली रखें। उन्होंने भारतेन्दु युग से लेकर वर्तमान तक की पत्रिकाओं की समीक्षात्मक व्याख्या की। प्रो० पंकज ने 20 मार्च को विभाग में 'परिचय' परिवार और हिन्दी विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में 'लघु पत्रिकाओं का बदलता स्वरूप और उनकी भूमिका' विषयक संगोष्ठी को बतौर मुख्य वक्ता सम्बोधित किया। इस मौके पर युवाकवि श्रीप्रकाश शुक्ल के सम्पादन में निकलने वाली पत्रिका 'परिचय' के आठवें अंक का लोकार्पण भी किया गया। अध्यक्षता करते हुए प्रो० चौथीराम यादव ने कहा कि आज साहित्य और पत्रकारिता एक-दूसरे के निकट आ रहे हैं यह शुभ लक्षण है।

पं० बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' समारोह

साहित्य अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद भोपाल द्वारा बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' के जन्म स्थान ग्राम-भ्याना में पुष्पांजलि समारोह आयोजित किया गया। इसी कड़ी में शुजालपुर में पं० बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' समारोह का आयोजन किया गया। हिन्दी साहित्य चेतना मंच की अध्यक्ष ग्रीष्मा शाह, सचिव रचना जैन, पारस चोपड़ा, काजी एस० रहमान एवं स्थानीय सरपंच सुधीर धनगढ़ ने भाग लिया। श्यामसुन्दर दुबे की अध्यक्षता में बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' का 'समाज दर्शन', 'भाषण और पत्र', 'उर्मिला', 'सम्पादकीय अग्रलेख' एवं 'जीवन वृत्त' विषयों पर विमर्श हुआ।

हरिशंकर परसाई-शरद जोशी प्रसंग

साहित्य अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद भोपाल द्वारा शिवपुरी में हरिशंकर परसाई-शरद जोशी प्रसंग का आयोजन किया गया। इस समारोह का शुभारम्भ 'परसाई और उनका व्यंग्य' विषय से हुआ। इस सत्र की अध्यक्षता परशुराम शुक्ल 'विरही' ने की। दूसरा सत्र 'शरद जोशी और उनका व्यंग्य' विषय पर आयोजित किया गया। इस सत्र की अध्यक्षता डॉ० विद्यानंदन राजीव ने की।

दिनकर जयंती व निराला पर्व का आयोजन

नई दिल्ली। त्रिवेणी सभागार में हिन्दी अकादमी द्वारा राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर की जन्मशती के अवसर पर दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। चार सत्रों में आयोजित इस संगोष्ठी में दिनकर की आवाज का वैशिष्ट्य, हमारा समय और वीर कविता-ओज, पौरुष और आह्वान की प्रासंगिकता, दिनकर और नई कविता—अंतर्सम्बन्ध की पड़ताल पर विचार और उनकी कविताओं का पाठ किया गया। इस संगोष्ठी में अशोक वाजपेयी, मैनेजर पांडेय, विजयेन्द्र नारायण सिंह, प्रो० सत्यकाम, कृष्णदत्त पालीवाल, ओम निश्चल व कई अन्य विद्वानों ने अपने विचार रखते हुए कहा कि दिनकर एक बड़े सार्वजनिक कवि हैं जिन्होंने भारतीय परम्परा की सामासिकता और समरसता पर जोर दिया।

'पत्रों के दर्पण में बाबू गुलाबराय'

हिसार में जिज्ञासा मंच द्वारा आयोजित मूर्धन्य साहित्यकार बाबू गुलाबराय की 121वीं जयंती समारोह की अध्यक्षता श्री उदयभानु हंस ने की। उन्होंने बाबू गुलाबरायजी के कनिष्ठ पुत्र विनोद शंकर गुप्त द्वारा सम्पादित पुस्तक 'पत्रों के दर्पण में बाबू गुलाबराय' का विमोचन किया। नवगीतकार श्री कुमार रवीन्द्र ने मुख्य वक्ता के रूप में बाबू गुलाबराय द्वारा लिखित पत्रों के माध्यम से बाबूजी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला।

24वाँ अन्तर्राष्ट्रीय रामायण सम्मेलन मॉरिशस में सम्पन्न

हिन्द महासागर क्षेत्र में रामायण के देश के रूप में प्रसिद्ध मॉरिशस में पिछले दिनों तीन दिवसीय 24वाँ अन्तर्राष्ट्रीय रामायण सम्मेलन सफलता और सार्थकता के साथ सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन में मॉरिशस के सैकड़ों प्रतिनिधियों के अलावा भारत, यू०के०, फ्रांस, दक्षिण अफ्रीका, अमेरिका, त्रिनिदाद, थाईलैंड आदि देशों के 50 से अधिक विद्वानों ने सहभागिता की।

सम्मेलन तुलसी जयन्ती को प्रारम्भ हुआ जिसमें भारत के कार्यवाहक उच्चायुक्त महामहिम संजीव रंजन, संस्कृति मंत्री एम० गोरेसू, उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री राजेश जीता आदि उपस्थित थे।

साथ ही रामायण केन्द्र मॉरिशस के अध्यक्ष डॉ० राजेन्द्र अरुण के साहित्य पर आधारित शोध ग्रन्थ तथा प्रवासी संसार पत्रिका का भी लोकार्पण किया गया। सम्मेलन में 'सद्भाव और शांति का स्रोत-रामायण', 'रामायण में आपदा प्रबंधन एवं क्षति नियन्त्रण', 'भारतवंशियों के सामाजिक एवं राजनीतिक उत्थान में रामायण की भूमिका', 'वर्तमान समय में रामायण की प्रासंगिकता', 'मॉरिशस के परिदृश्य में रामायण', 'रामायण का विश्व संस्कृति और साहित्य पर प्रभाव' विषयों पर भी चर्चा हुई।

रामायण की प्रासंगिकता पर गोष्ठी

''यूनेस्को को एक वर्ष रामायण वर्ष की तरह घोषित करना चाहिए। इस वर्ष में पूरे विश्व में रामायण का संदेश ले जाना चाहिए और विश्व भर में रामायण पर गोष्ठियाँ आयोजित की जानी चाहिए।'' यह प्रस्ताव फारसी के प्रसिद्ध विद्वान अब्दुल वदूद अज़हर ने अक्षरम् और अन्तर्राष्ट्रीय रामायण सम्मेलन द्वारा 21वीं सदी में रामायण की प्रासंगिकता विषय पर इण्डिया इंटरनेशनल सभागार में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय रामायण संगोष्ठी में दिया। तीन सत्रों में चली इस गोष्ठी का उद्घाटन करते हुए पूर्व राज्यपाल टी०एन० चतुर्वेदी ने वर्तमान सदी में इसकी प्रासंगिकता पर बल दिया। संगोष्ठी के मुख्य वक्ता डॉ० नरेन्द्र कोहली ने कहा कि भारत में धर्म और विज्ञान में कोई विरोध नहीं है। उन्होंने कहा वाल्मीकि रामायण सांस्कृतिक होने के साथ ऐतिहासिक ग्रन्थ भी है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, अमेरिका से पधारे प्रसिद्ध डॉ० रमेश गुप्ता ने कहा कि रामायण का युवा पीढ़ी और विज्ञान से कोई विरोध नहीं है। उन्होंने कहा कि परिवार व्यवस्था को रामायण जैसे ग्रन्थों का संदेश प्रसारित करके ही बचाया जा सकता है। इस अवसर पर फ्रांस से पधारी श्रीमती स्वेतलाना डींच ने रामकथा के अन्य भाषाओं में अनुवाद पर बल दिया।

रामशरण जोशी की पुस्तकों का लोर्कापण

आज हिन्दी व समाज विज्ञान का रिश्ता बेहद कमजोर हो गया है। हिन्दुस्तान के समाज विज्ञानी अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त करने की तमन्ना में हिन्दी की बजाय अंग्रेजी में लिखना पसन्द करते हैं। यह विचार वरिष्ठ आलोचक मैनेजर पाण्डेय ने साहित्य अकादमी सभागार में वरिष्ठ पत्रकार रामशरण जोशी की तीन पुस्तकों—'आदमी, बैल और सपने', 'हस्तक्षेप' और 'चुनौतियों का चक्रव्यूह' के लोकार्पण समारोह में व्यक्त किए।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए श्री पाण्डेय ने कहा कि हिन्दी में लिखने-पढ़ने वाले कविता, कहानी और उपन्यास से बाहर ही नहीं आते। पर रामशरण जोशी जैसे समाजविज्ञानी आज हिन्दी में इसके अपवाद हैं।

समारोह के मुख्य अतिथि समाजशास्त्री प्रो० आनन्द कुमार ने कहा कि बहुत सम्भलकर लिखने वाले पत्रकारों की जमात में श्री जोशी स्थिरभाव से सामाजिक सच को लिखते हैं।

कृष्ण-भक्ति काव्य पर संगोष्ठी

चेन्नई की प्रमुख साहित्यिक संस्था साहित्यानुशीलन समिति ने विगत दिनों राजेन्द्र बाबू भवन के सभागार में कृष्ण-भक्ति काव्य पर प्रबुद्ध विचारक एवं सुकवि गिरीश पाण्डे की अध्यक्षता में संगोष्ठी का आयोजन किया। नगर के विद्वान् अनुशीलकों ने 'कवियों के कृष्ण' शीर्षक के अन्तर्गत विभिन्न भाषाओं के साहित्य पर समीक्षात्मक निबन्ध प्रस्तुत किये। समिति के अध्यक्ष डॉ० इंदरराज बैद ने कहा कि कृष्ण भारतीय वाङ्मय में पुराण-पुरुष और इतिहास-पुरुष के रूप में ही नहीं, काव्य-पुरुष के रूप में

भी प्रतिष्ठित हैं। 'सूरदास के कृष्ण' पर डॉ० चुन्नीलाल शर्मा ने और 'रसखान के कृष्ण' पर डॉ० विद्या शर्मा ने तमिल के 'पेरियालवार के कृष्ण' पर डॉ० लक्ष्मी अय्यर ने, तमिल कवयित्री 'आण्डाल के कृष्ण' पर डॉ० आर०एम० श्रीनिवास ने, तेलुगु के भक्त कवि 'पोतना के कृष्ण' पर डॉ० के वैजयंती ने, कन्नड़-कवि 'पुरन्दरदास के कृष्ण' पर श्रीमती एन० लक्ष्मी ने और मलयालम के भक्त रचनाकार 'पून्तानम् के कृष्ण' पर डॉ० के० वत्सला किरण ने अपने विद्वत्तापूर्ण प्रपत्रों को प्रस्तुत किया।

संगोष्ठी सम्पन्न

21 फरवरी को डॉ० रामविलास शर्मा फाउंडेशन द्वारा उनके 96वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में त्रिवेणी कला संगम, नई दिल्ली के सभागार में 'सन् सत्तावन की राज्यक्रांति और रामविलास शर्मा' विषय पर गोष्ठी आयोजित की गई। विषय प्रवेश श्री अरुण कुमार त्रिपाठी ने किया तथा मुख्य वक्ता कोलकाता विश्वविद्यालय के प्रो० शंभुनाथ थे। अध्यक्षीय भाषण प्रो० विश्वनाथ त्रिपाठी ने किया।

संत तुकाराम पर संगोष्ठी

19 फरवरी को साहित्य अकादेमी की ओर से संत तुकाराम की चौथी जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर 'सबद-गायन : संत तुकाराम और भक्ति परम्परा' विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन प्रसिद्ध आलोचक प्रो० नामवर सिंह ने किया। वरिष्ठ मराठी लेखक श्री भालचंद्र नेमाडे ने बीज भाषण दिया। अकादेमी के अध्यक्ष श्री सुनील गंगोपाध्याय ने संत तुकाराम की अंग्रेजी में अनूदित कुछ कविताओं का पाठ किया, जबकि उपाध्यक्ष प्रो० सुतिंदर सिंह नूर ने धन्यवाद ज्ञापन किया। सत्र की अध्यक्षता श्री सदानंद मोरे ने की। इस अवसर पर प्रो० एन०एन० रेलेकर ने अपने विचार रखे तथा डॉ० मुकुंद दातार ने कहा कि तुकाराम के स्फुट काव्यों की शृंखला अभंग गाथा को 'पंचमवेद' भी कहा जाता है।

दिनकर पर तीन दिवसीय संगोष्ठी सम्पन्न

8 मार्च को साहित्य अकादेमी की ओर से रामधारी सिंह दिनकर जन्म-शतवार्षिक संगोष्ठी आयोजित की गई। संगोष्ठी में सर्वश्री चितरंजन मिश्र, शशिभूषण शीतांशु ने दिनकर के विचार दर्शन पर आलेख पढ़े। सत्र के अन्त में आलेखवाचकों और श्रोताओं के बीच संवाद हुआ। श्री प्रभाकर श्रोत्रिय ने अध्यक्षीय व्याख्यान दिया। दिनकर के संस्कृति चिन्तन पर केन्द्रित सत्र में सर्वश्री ए अरविंदाक्षन, नीरज और ज्योतिष जोशी ने आलेख पढ़े। समापन व्याख्यान में श्री केदारनाथ सिंह ने कहा कि दिनकर ने शिक्षित और अशिक्षित जन, दोनों की समझ में आने वाली कविता रची। सत्र की अध्यक्षता कैलाश वाजपेयी ने की।

अत्र-तत्र-सर्वत्र

घासीराम विश्वविद्यालय के कुलपति बने प्रो० चतुर्वेदी

वाराणसी। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की कार्यकारिणी परिषद के सदस्य प्रो० लक्ष्मण चतुर्वेदी 'गुरु घासीराम केन्द्रीय विश्वविद्यालय' बिलासपुर (छत्तीसगढ़) के पहले कुलपति बनाए गए हैं। प्रो० चतुर्वेदी ने लगभग तीन दशक तक काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के भौतिकी विभाग में अध्यापन कार्य भी किया। एक वर्ष पूर्व ही वे सेवानिवृत्त हुए। इससे पहले ही उन्हें रायपुर स्थित 'पं० रविशंकर शुक्ला यूनिवर्सिटी' का कुलपति बनाया गया था जहाँ से वे अप्रैल में सेवानिवृत्त होने वाले थे। इससे पहले ही वे घासीराम विश्वविद्यालय के कुलपति बना दिए गए।

दुर्लभ पाण्डुलिपियों का अस्तित्व संकट में

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में 106 साल पुराने सरस्वती पुस्तकालय में अनुमानत: तीन लाख पुस्तकें और एक लाख पाण्डुलिपियाँ हैं। हर साल एक करोड़ रुपये का बजट पाण्डुलिपियों के प्रकाशन के लिए स्वीकृत होता है लेकिन उनके रखरखाव का कोई इन्तजाम व बजट नहीं है। 35 साल से पाण्डुलिपियों का कपड़ा नहीं बदला गया है यानि मेडिकेटेड क्लाथ (खारवायुक्त कपड़ा) काफी पुराना हो गया है जबकि प्रत्येक तीन वर्ष पर इसे बदल दिया जाना चाहिए। इस स्थिति में धरोहरों के खराब होने का खतरा पैदा हो गया है। इंदिरा कला केन्द्र ने पाण्डुलिपियों की माइक्रो फिल्म बना ली है लेकिन यह स्थिति सर्वग्राही नहीं है। पुस्तकालय के रखरखाव के मद में सालाना पाँच लाख रुपये मिलते हैं। यह रकम केवल किताबों की झाड़-पोंछ में चुक जाती है। पिछले साल पाण्डुलिपियों के कपड़े बदलने की बजाय उन पर सिर्फ दवा का छिड़काव किया गया था लेकिन यह प्रयोग कई धरोहरों के लिए नुकसानदेह साबित हुआ।

पुस्तकालय में एक हजार साल पुरानी श्रीमद्भागवत हस्तलिखित कागज पर है। यह देश की प्राचीनतम है। इसी तरह स्वर्णपत्र आच्छादित (लाक्षपत्र) पर कमवाचा (वर्मी लिपि) यहीं संग्रहित है। रास पंचाध्यायी (सचित्र) स्वर्णाक्षरयुक्त और इसकी सूक्ष्म कलात्मकता अनुपम है। यहाँ वेद, कर्मकाण्ड, वेदान्त, सांख्ययोग, धर्मशास्त्र, पुराणेतिहास, ज्योतिष, मीमांसा, न्याय वैशेषिक, साहित्य, व्याकरण व आयुर्वेद की दुर्लभ पाण्डुलिपियाँ रखी हैं। इसके अलावा बौद्ध, जैन, भक्ति, कला और संगीत के विषय भी संरक्षित किए गए हैं। इनमें सबसे प्राचीन, वर्तमान देवनागरी सहित बांग्ला, उड़िया, मैथिली, गुरुमुखि, शारदा, अरबी-फारसी लिपि में कागज सहित भोजपत्र, काष्ठ पत्र, शिला पत्र पर लिखी गई हैं। यही नहीं गोविन्द भट्ट कृत ऋग्वेद संहिता भाष्य, श्रुतिविकाश सायणाचार्य कृत ऋग्वेद संहिताभाष्य से प्राचीन है।

'गीतांजलि' यू०के० दिल्ली शाखा का शुभारम्भ

बहुभाषीय साहित्यिक समुदाय, बर्मिंघम (यू०के०) की संस्था 'गीतांजलि' की दिल्ली शाखा का शुभारम्भ साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली के सभागार में किया गया। इसका उद्देश्य देश भर की विभिन्न भाषाओं को एक साथ जोड़ना और उनका सामासिक व सांस्कृतिक उत्थान करना है। इस संस्था की दिल्ली शाखा की संस्थापक श्रीमती कुसुम वीर होंगी। श्रीमती कमला सिंघवी संरक्षक व श्री दिनेश मिश्र परामर्शदाता होंगे।

श्री रमाकांत रथ और प्रो० गोपीचंद नारंग को महत्तर सदस्यता

17 फरवरी को साहित्य आकादेमी के अध्यक्ष श्री सुनील गंगोपाध्याय की अध्यक्षता में सम्पन्न सामान्य परिषद् की बैठक में प्रख्यात ओड़िया कवि श्री रमाकांत रथ तथा प्रख्यात उर्दू समालोचक एवं विद्वान् प्रो० गोपीचंद नारंग को अकादेमी का 'महत्तर सदस्य' चुना गया।

एक सेमेस्टर के बाद छात्र ले सकेंगे दूसरे संस्थान में दाखिला

नई दिल्ली। उच्च शिक्षा ग्रहण कर रहे छात्रों को अब एक ही संस्थान में पढ़ने की बाध्यता नहीं रहेगी। वे अपना कोर्स किसी अन्य संस्थान से भी पूरा कर सकेंगे।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने 23 मार्च को देश के केन्द्रीय, राज्य व डीम्ड विश्वविद्यालयों के शैक्षिक सुधार के लिए ताजा दिशा-निर्देश जारी किए। इनमें कहा गया है कि विश्वविद्यालय ऐसी व्यवस्था करें, जिससे छात्र एक सेमेस्टर के बाद दूसरे सेमेस्टर की पढ़ाई के लिए पसन्द के संस्थान में दाखिला ले सकें। ऐसा नहीं करने वाले विश्वविद्यालयों को अनुदान में कटौती का सामना करना पड़ सकता है। यूजीसी के अध्यक्ष सुखदेव थोराट ने इस सम्बन्ध में सभी विश्वविद्यालयों के कुलपतियों को पत्र लिखा है।

इजरायली सीख रहे हैं हिन्दी

इजराइल के सम्बन्ध भारत से पहले भी काफी मजबूत हैं लेकिन अब इजराइल भारतीयों के साथ रिश्ता और भी मजबूत करना चाहता है। इसके लिए पहली बार इजराइल ने हिन्दी और उर्दू भाषाओं की वेबसाइट लांच की है और साथ ही दोनों भाषाओं में पत्रिकाएँ भी निकाली हैं। भारत में इजराइल के राजदूत मार्क सोफेर ने हिन्दी-उर्दू साइट लांच करते हुए कहा कि वह हिन्दी के साथ ही उर्दू में भी भारतीयों से सम्पर्क बढ़ाना चाहते हैं।

स्मृति-शेष

आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी का निधन

हिन्दी व संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान 80 वर्षीय **आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी** का सोमवार, 30 मार्च 2009 को तड़के उज्जैन में निधन हो गया। वाराणसी में 4 जनवरी 1929 को जन्मे श्री त्रिपाठी ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से एम०ए०, विशारद, साहित्य व पी-एचडी० व डीलिट्० उपाधि प्राप्त की थी।

हिन्दी साहित्य के मूर्धन्य विद्वान प्रो० राममूर्ति त्रिपाठी की आत्मा की शान्ति के लिए काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, हिन्दी विभाग में शोकसभा हुई। विभागाध्यक्ष प्रो० कुमार पंकज ने शोक प्रस्ताव पढ़ा। वक्ताओं ने कहा, ''प्रो० राममूर्ति त्रिपाठी भारतीय काव्यशास्त्र और संत साहित्य के उद्भट विद्वान् थे। उनके निधन से साहित्य जगत की अपूरणीय क्षति हुई है।''

हरनारायण विहार कालोनी, वाराणसी में भी प्रो० युगेश्वर की अध्यक्षता में शोक सभा हुई जिसमें डॉ० उदयप्रताप सिंह, डॉ० अशोक सिंह, डॉ० बदरीनाथ कपूर, डॉ० कामेश्वर उपाध्याय, डॉ० बाबूराम त्रिपाठी आदि ने अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

गजानन शास्त्री पंचतत्त्व में विलीन

वाराणसी के वैदिक तिलक, मीमांसा भूषण व महामहोपाध्याय की उपाधि से अलंकृत संस्कृत के विद्वान पंडित 95 वर्षीय **गजानन शास्त्री मुसलगांवकर** का पार्थिव शरीर विगत 6 मार्च को मणिकर्णिका घाट पर पंचतत्त्व में विलीन हो गया। संस्कृत के विद्वानों के अलावा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, संस्कृत विश्वविद्यालय के प्रोफेसर, प्राध्यापक, विहिप व संघ के पदाधिकारी सहित गणमान्य नागरिक मौजूद थे। श्री शास्त्री ने पूर्व मीमांसा, वेदांत, सांख्य, न्याय साहित्य, शैवागम, वेद-पुराण, धर्म शास्त्र, नीति शास्त्र पर कई पुस्तकें लिखीं। उन्हें राष्ट्रपति पुरस्कार, विश्व भारती अलंकरण से सम्मानित किया गया था।

साहित्यकार यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' नहीं रहे

विगत 4 मार्च 2009 को 78 वर्षीय अनेकानेक पुरस्कारों से सम्मानित सुप्रसिद्ध हिन्दी लेखक एवं साहित्यकार **श्री यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'** का लम्बी बीमारी के बाद बीकानेर में निधन हो गया। सम्पूर्ण हिन्दी जगत स्तब्ध एवं मर्माहत है। उन्होंने लगभग 125 ग्रन्थों की रचना की जिनमें 'एक और मुख्यमंत्री' एवं 'ढोलन कुंज गली' सहित लगभग 60+ उपन्यास, 15+ कहानी संग्रह, 2 कविता-संग्रह, नाटक, एक संस्मरण और पचास बाल साहित्य शामिल हैं। इसके अलावा राजस्थानी में भी उनकी 5-6 पुस्तकें प्रकाशित हुईं। आपके साहित्यिक अवदान के लिए राजस्थान साहित्य अकादमी का सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार 'मीरा पुरस्कार', केन्द्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कार, राजस्थानी भाषा साहित्य अकादमी पुरस्कार, राजस्थान पत्रिका का साहित्यिक पुरस्कार, साहित्य महोपाध्याय, विद्या वाचस्पति, साहित्य श्री, राहुल सांकृत्यायन और झाबरमल शर्मा पुरस्कार आदि अनेकानेक सम्मान एवं पुरस्कारों से आपको सम्मानित किया जा चुका है। आपके उपन्यासों पर दूरदर्शन द्वारा टेलीफिल्म व धारावाहिक भी बनाये जा चुके हैं। जैसे—'हजार घोड़ों का सवार', 'जनानी ड्योढ़ी', 'गुनाहों की देवी' आदि।

पद्मश्री कन्हैयालाल सेठिया का निधन

'धरती धोरां री' इस राजस्थानी गीत के रचनाकार यशस्वी महाकवि, पद्मश्री **कन्हैयालाल सेठिया** ने पिछले दिनों अन्तिम साँस ली। वे स्वतन्त्रता सेनानी और समाज सुधारक होने के साथ-साथ विचारक, कवि एवं लेखक थे। उन्होंने अपनी सतत सारस्वत-साधना से हिन्दी और राजस्थानी साहित्य-भण्डार को समृद्ध किया है। उन्हें साहित्य अकादमी, भारतीय ज्ञानपीठ जैसी कई राष्ट्रीय संस्थाओं ने सम्मानित किया। श्री सेठिया जी के प्रयास एवं रचनाओं से राजस्थानी-भाषा ने राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पहचान प्राप्त की है। ऐसे कृतिकार, मनीषी को हमारी श्रद्धांजलि।

सुप्रसिद्ध लेखिका
श्रीमती सुशीला भारती का निधन

हैदराबाद की सुप्रसिद्ध प्राध्यापिका, हिन्दी-संस्कृत की व्याख्याता एवं लेखिका 85 वर्षीय **श्रीमती सुशीला भारती** का 14 फरवरी 2009 को उदगीर (महाराष्ट्र) में निधन हो गया। सुशीलाजी हैदराबाद स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी, आर्य नेता स्व० बंसीलाल वकील की ज्येष्ठ सुपुत्री तथा जाने-माने हिन्दी विद्वान् स्व० (डॉ०) राजेन्द्रनाथ भारती की धर्मपत्नी थीं।

क्रांतिकारी कवि डॉ० ज्वालामुखी का निधन

पिछले दिनों लब्ध प्रतिष्ठित तेलुगु के क्रांतिकारी कवि **डॉ० ज्वालामुखी** का निधन 71 वर्ष की आयु में हुआ। तेलुगु नवलेखन के अंतर्गत 'दिगंबर कबुलु' के नाम से उन्होंने अपने पाँच साथियों चेर बंड राजु, निखिलेश्वर, भैरवय्या महास्वप्न आदि से मिलकर एक गुट बनाया था और अपनी कविताओं के द्वारा सोते लोगों को जगाने का प्रयास किया था। बाद में उन्होंने क्रांतिकारी लेखक संघ, भारत-चीन मैत्री संघ की स्थापना में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। केन्द्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कार के विजेता उनकी रचनाओं में रांगेय राघव जीवित चरित्रा, हैदराबाद कथलु, वोटमी-तिरुगुबाटु, वेलाडिना मंदारम आदि उल्लेखनीय हैं।

श्रद्धांजलि/संस्मरण

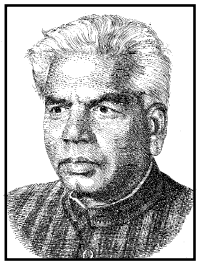

आपके यशस्वी सम्पादन में प्रकाशित पत्रिका 'भारतीय वाङ्मय' के फरवरी-09 अंक से ज्ञात हुआ कि हिन्दी साहित्य एवं समालोचना के सशक्त हस्ताक्षर आचार्य रामचन्द्र तिवारी का महाप्रयाण हो गया है। उन्होंने भाषा एवं साहित्य-समालोचना के लिये अपना पूरा जीवन अर्पित कर दिया था। उनका तापस साहित्यानुशासन व जीवन हिन्दी साहित्य एवं समाज के लिये सदैव अभिनन्दनीय रहेगा।

—भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश', *सम्पादक,* 'सहकार'

'भारतीय वाङ्मय' का जनवरी अंक मिला। 'छपते-छपते' में ऊपर ही हिन्दी के मूर्धन्य आलोचक डॉ० रामचन्द्र तिवारी के निधन का समाचार पढ़कर झटका लगा। तिवारी जी जिस तरह से अभी सक्रिय और सृजनरत थे, उससे सचमुच ही उनका जाना हिन्दी साहित्य-समीक्षा की अपूरणीय क्षति है। वे वास्तव में ही मौन साधक थे। बिना किसी वाद-विवाद के पचड़े में पड़े उन्होंने विपुल मात्रा में लेखन किया है और हिन्दी गद्य को समृद्ध किया है। समीक्षा के क्षेत्र में उनका अवदान अविस्मरणीय रहेगा। तिवारीजी का निधन विश्वविद्यालय प्रकाशन की भी क्षति है क्योंकि उनकी अधिकांश पुस्तकें इसी प्रकाशन से छपी हुई हैं। क्या संयोग है कि जिस अंक में उनकी महत्त्वपूर्ण कृतियों का परिचय प्रकाशित है, उसी के प्रारम्भ में उनके निधन की दुखद सूचना भी प्रकाशित करनी पड़ी। 'भारतीय वाङ्मय' के माध्यम से मैं अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि हिन्दी साहित्य के इस विशिष्ट समीक्षक को प्रस्तुत करता हूँ। **—डॉ० हरीश कुमार शर्मा,** अरुणांचल प्रदेश

श्रद्धांजलि : आचार्य रामचन्द्र तिवारी को

ज्ञान भक्ति के योग, श्रेष्ठ वाणी के सुत थे।
तन मन से अति विमल, अनेक गुणों से युत थे॥
यश आकाँक्षा रहित, सदा परहित में रत थे।
सद्गृहस्थ, कर्तव्य परायण, मृदुल सुमत थे॥

—डॉ० रुद्रदत्त चतुर्वेदी, हीरापुरी - गोरखपुर

लाखों में एक था

मेरा यार भी, अजीब इंसान था
नाम से राम, काम से रहमान था
काबिल था, कामिल था, और बेमिसाल
यार का यार, यारी का मान था
नेक था भला था, एक था लाखों में
बनारसी कबीर, हिन्दी-रसखान था
सरल सी सूरत, सादगी की मूरत
सीधा था, आदमी की पहचान था
सहज स्वभाव था, भाव साधु-संत का
दिल का विशाल, तो मन का दीवान था

—डॉ० सत्यनारायण त्रिपाठी

प्राप्त पुस्तकें और पत्रिकाएँ

श्रीचतु:शरणप्रकीर्णकम् : ग्रन्थकार : श्रीवीरभद्रगणिमहाराजाः, संशोधक-सम्पादक : श्री विजयकीर्तियशसूरीश्वर, प्रकाशक : सन्मार्ग प्रकाशन, अहमदाबाद, प्रथम आवृत्ति : 2008, मूल्य : रु० 200.00 मात्र

जैन-आगम-साहित्य मुख्यत: दो भागों में विभक्त है। अंगबाह्य आगम और अंग-प्रविष्ट-आगम। इनमें द्वितीय अर्थात् अंग-प्रविष्ट-आगम वह है जिसका उपदेश तीर्थंकरों ने स्वयं दिया और गणधरों ने जिसे सूत्ररूप में संगृहीत किया। इनकी संख्या 12 है और अंगबाह्य-आगम वे हैं जो सीधे तीर्थंकरों की वाणी नहीं हैं अपितु जिनमें तीर्थंकरों के विचारों की व्याख्या अन्य आचार्यों द्वारा की गयी है। परम्परागत मान्यता के अनुसार जिस तीर्थंकर के संघ में जितने श्रमण होते हैं उनमें से प्रत्येक द्वारा एक-एक प्रकीर्णक की रचना का उल्लेख मिलता है। जैन-साहित्य में प्रकीर्णक एक पारिभाषिक शब्द है, तदनुसार ''अरिहंत के उपदिष्ट श्रुतों के आधार पर श्रमण निर्ग्रन्थ भक्ति-भावना द्वारा जिन ग्रन्थों की रचना करते हैं वे प्रकीर्णक कहलाते हैं।'' इनमें कालिक एवं उत्कालिक दोनों प्रकार के प्रकीर्णक होते हैं। श्री वीरभद्रगणि द्वारा रचित 'चतु:शरण प्रकीर्णक' उत्कालिक है। इस सूत्र में तीन प्रमुख अधिकार हैं—(1) चतु:शरण स्वीकार; (2) दुष्कृतगर्हा; (3) सुकृत अनुमोदन। इस ग्रन्थ के साथ विद्वान सम्पादक ने ग्रन्थ के बृहद विवरण (श्री चिरंतणाचार्य); अवचूरि (श्री सोमसुंदरसूरि); संक्षिप्तवृत्ति (श्री विजय गुणरत्न सूरि) एवं बालावबोध (श्री विनय विजय) को भी एकत्र संकलित कर दिया है। आगम-शास्त्र के निरन्तर अध्ययन एवं अनुसन्धान द्वारा यह महत् कार्य पूर्ण हुआ है। श्रमण-उपासकों के साथ विद्वानों-अध्येताओं के लिए भी यह ग्रन्थ उपादेय है।

पंचशील शोध समीक्षा (जनवरी-मार्च 09)—सम्पादक : डॉ० हेतु भारद्वाज, पंचशील प्रकाशन, फिल्म कालोनी, चौड़ा रास्ता, जयपुर-302 003

अक्षरम् संगोष्ठी (जुलाई-दिसम्बर 08)—सम्पादक : नरेश शांडिल्य, ए-5 मनसाराम पार्क, संडे बाजार रोड, उत्तम नगर, नई दिल्ली-59

नव निकष (फरवरी 09)—सम्पादक : डॉ० लक्ष्मीकान्त पाण्डेय, ज्ञानोदय प्रकाशन, 6-7 जी, मानसरोवर काम्प्लेक्स, पी० रोड, कानपुर

वैखरी (जनवरी-जून 09)—सम्पादक : डॉ० अमरेन्द्र, लाल खाँ दरगाह लेन, विश्वविद्यालय पथ, सराय, भागलपुर-812002 (बिहार)

आकंठ (फरवरी 09)—सम्पादक : हरिशंकर अग्रवाल, इंदिरा गाँधी वार्ड, तहसील कॉलोनी, बनवारी रोड, पिपरिया (म.प्र.)

मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद पत्रिका (फरवरी 09)—सम्पादक : डॉ० बी० राम संजीवय्या, मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद्, 58 वेस्ट ऑफ कोर्ट रोड, राजाजी नगर, बेंगलूर-560 010

राष्ट्रभाषा (फरवरी 09)—सम्पादक : प्रा० अनंतराम त्रिपाठी, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

संकल्य (अक्टूबर-दिसम्बर 09)—सम्पादक : प्रो० टी० मोहन सिंह, हिन्दी अकादमी, फ्लैट नं० 153/ए, ब्लाक नं० 10, दूसरी मंजिल, जनप्रिया टाउनशिप, मल्लापुर, हैदराबाद-76

मंथन (साहित्य विशेषांक 09)—प्रधान सम्पादक : महेश अग्रवाल, आफिस नं० 16, अग्रसेन टॉवर, तलमजला, कोलबाडरोड, प्रताप सिनेमा के पास, ठाणे (प०)-400601 (महाराष्ट्र)

कृषि वार्ता (जन.-फरवरी-मार्च 09)—सम्पादक : डॉ० चंदीराम ग्वालानी, ओमसाईं काम्प्लेक्स, जी ई० रोड, फूल चौक, रायपुर

पूर्वग्रह (जनवरी-मार्च 09)—सम्पादक : प्रभाकर श्रोत्रिय, भारत भवन न्यास, ज० स्वामीनाथन मार्ग, शामला हिल्स, भोपाल

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 10 **अप्रैल 2009** **अंक : 4**

संस्थापक एवं पूर्व प्रधान संपादक

स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी

संपादक : **परागकुमार मोदी**

वार्षिक शुल्क : रु० 50.00

अनुरागकुमार मोदी

द्वारा

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०

वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2003 RNI No. UPHIN/2000/10104

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत

Licenced to post without prepayment at

G.P.O. Varanasi

Licence No. LWP-VSI-01/2001

सेवा में,

☎ : Offi. : (0542) 2413741, 2413082, 2421472, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax : (0542) 2413082

E-mail : sales@vvpbooks.com ● Website : **www.vvpbooks.com**

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बॉक्स 1149

चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIANS)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149

Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)